हिन्दी दैनिक

R.N.I.NO.UPHIN/2014/59804

प्रयाग दर्पण

वर्ष : 09 | अंक : 08 | प्रयागराज, शनिवार 08 अप्रैल , 2023 | हिन्दी दैनिक | पृष्ठ–4 | मूल्य : 3 रुपया

पीएम मोदी शिक्षा का महत्व नहीं समझते : मनीष सिसोदिया

नई दिल्ली। जेल में बंद आम आदमी पार्टी (आप) के नेता और दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने देशवासियों को एक पत्र लिखकर पीएम मोदी पर कम पढ़ा–लिखा होने के चलते देश के लिए खतरनाक होने का आरोप लगाया है। दिल्ली के मुख्यमंत्री और आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने शुक्रवार को ट्वीट कर पत्र साझा करते हुए कहा, मनीष सिसोदिया ने जेल से देश के नाम चिट्ठी लिखी, जिसमें लिखा है। प्रधानमंत्री का कम पढ़ा–लिखा होना देश के लिए बेहद खतरनाक मोदी जी विज्ञान की बातें नहीं समझते मोदी जी शिक्षा का महत्व नहीं समझते,पिछले कुछ वर्षों में 60,000 स्कूल बंद किए, भारत की तरक्की के लिए पढ़ा–लिखा पीएम होना जरूरी,मनीष सिसोदिया ने अपने पत्र में लिखा, आज हम 21वीं सदी में जी रहे हैं। दुनिया भर में विज्ञान और टेक्नॉलॉजी में, हर रोज नई तरक्की हो रही है। सारी दुनिया आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की बात कर रही है। ऐसे में जब मैं प्रधानमंत्री को ये कहते हुए सुनता हूं कि गंदे नाले में पाईप डालकर उसकी गंदी गैस से चाय या खाना बनाया जा सकता है, तो मेरा दिल बैठ जाता है। क्या नाली की गंदी गैस से चाय या खाना बनाया जा सकता है? नहीं! जब प्रधानमंत्री कहते हैं कि बादलों

के पीछे उड़ते जहाज को रडार नहीं पकड़ सकता तो पूरी दुनिया के लोगों में वो हास्य के पात्र बनते हैं। स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ने वाले बच्चे उनका मजाक बनाते हैं।उन्होंने आगे कहा, उनके इस तरह के बयान देश के लिए बेहद खतरनाक हैं। जैसे पूरी दुनिया को पता चल जाता है कि भारत के प्रधानमंत्री कितने कम पढ़े–लिखे हैं और उन्हें विज्ञान की बुनियादी जानकारी तक नहीं है। दूसरे देशों के राष्ट्र अध्यक्ष जब प्रधानमंत्री से गले मिलते हैं तो एक एक झप्पी की भारी कीमत लेकर चले जाते हैं। बदले में न जाने कितने कागजों पर साइन करवा लेते हैं क्योंकि प्रधानमंत्री तो समझ ही नहीं पाते कि क्योंकि वो तो कम पढ़े–लिखे हैं।उन्होंने लिखा, आज देश का युवा तलाश में है। जो प्रेरणादायक है वो कुछ करना चाहता है। वो दुनिया जीतना चाहता है। साइंस और टेक्नॉलॉजी के क्षेत्र में वो कमाल करना चाहता है। क्या एक कम पढ़ा–लिखा प्रधानमंत्री आज के युवाओं के सपनों को पूरा करने की क्षमता रखता है? हाल के वर्षों में देश भर में 60,000 सरकारी स्कूल बंद कर दिए गए। क्यों? एक तरफ देश की आबादी बढ़ रही है। तो सरकारी स्कूलों की संख्या तो बढ़नी चाहिए थी? अगर सरकारी स्कूलों का स्तर अच्छा कर दिया जाता तो लोग अपने बच्चों को प्राइवेट से निकाल कर सरकारी स्कूलों में भेजना शुरू कर देते, जैसा कि अब दिल्ली में होने लगा है। लेकिन देश भर में सरकारी स्कूलों का बंद होना खतरे की घंटी है। इससे पता चलता है कि शिक्षा सरकार की प्राथमिकता है ही नहीं। अगर हम अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं देंगे, तो क्या भारत तरक्की कर सकता है? कभी नहीं!सिसोदिया ने अपने पत्र में कहा, मैंने प्रधानमंत्री मोदी जी का एक वीडियो देखा था, जिसमें वो बड़े गर्व के साथ कह रहे हैं कि वे पढ़े–लिखे नहीं हैं। केवल गांव के स्कूल तक ही उनकी शिक्षा हुई। क्या अनपढ़ या कम पढ़ा–लिखा होना गर्व की बात है? जिस देश के प्रधानमंत्री को कम पढ़े–लिखे होने पर गर्व हो, उस देश में एक आम आदमी के बच्चे के लिए अच्छी शिक्षा का कभी इंतजाम नहीं किया जाऐगा। हाल के वर्षों में 80,000 सरकारी स्कूलों को बंद किया जाना इस बात का जीता जागता प्रमाण है। ऐसे में मेरा भारत कैसे तरक्की करेगा? आप अपनी छोटी सी कंपनी के लिए एक मैनेजर रखने के लिए भी एक पढ़े–लिखे व्यक्ति को ही ढूंढ़ते हैं। क्या देश के सबसे बड़े मैनेजर को पढ़ा लिखा नहीं होना चाहिए ?गौरतलब है कि केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने 26 फरवरी को मनीष सिसोदिया को अब रद्द की जा चुकी दिल्ली आबकारी नीति 2021–22 के निर्माण व कार्यान्वयन में कथित तौर पर भ्रष्टाचार के सिलसिले में गिरफ्तार किया था।

माफिया अतीक के भाई अशरफ टली पेशी, 17 अप्रैल को बरेली कोर्ट में होगा पेश

बरेली। उत्तर प्रदेश के बरेली में केंद्रीय कारागार–2 में बंद अतीक के भाई और पूर्व विधायक खालिद अजीम उर्फ अशरफ की शुक्रवार सुबह एंटी करप्शन कोर्ट बरेली में पेशी होनी थी लेकिन इसके पहले ही उसकी तबीयत बिगडने के कारण पेशी टल गयी और अब वह 17 अप्रैल को अदालत के सामने पेश होगा। एंटी करप्शन कोर्ट बरेली विशेष लोक अभियोजक मनोज बाजपेई ने बताया कि अस्पताल जेल में मेडिकल चेकअप में उसे अस्वस्थ बताया गया है। इस कारण उसे कोर्ट नहीं ले जाया गया। उसे अब उक्त कोर्ट में 17 अप्रैल को पेश किया जाएगा। पिछले माह अशरफ और उसके गुर्गों के खिलाफ सात मार्च को बिथरी चौनपुर थाने में कई धाराओं में केस दर्ज हुआ था, इसमें एसआईटी जांच कर रही है। बरेली की भ्रष्टाचार निवारण मामलों संबंधी कोर्ट में इसी केस के सिलसिले में अशरफ की शुक्रवार सुबह पेशी होनी थी। सुबह करीब 10 बजे अशरफ को जेल अस्पताल में मेडिकल परीक्षण के लिए लाया गया। वहां जांच में उसका बीपी कम और धड़कनें बढ़ी मिलीं तो उसे कोर्ट नहीं ले जाया गया।

राहुल गांधी के खिलाफ अशोभनीय भाषा का इस्तेमाल गलत-अशोक गहलोत

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अशोक गहलोत काफी एक ट्वीट सामने आया है। अशोक गहलोत ने साफ तौर पर कहा है कि सोचा नहीं था कि ये दोनों राहुल गांधी के खिलाफ इतने नीचे स्तर की भाषा बोलने लगेंगे।भारत में राहुल गांधी को लेकर राजनीति जबरदस्त तरीके से जारी है। हाल में ही भाजपा नेता और केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने राहुल गांधी पर कुछ सवाल उठाए थे। इसके साथ ही कांग्रेस के पूर्व नेता गुलाम नबी आजाद ने भी राहुल गांधी को निशाना बनाया था। अब इसी के बाद कांग्रेस की ओर से दोनों नेताओं पर तीखा प्रहार किया जा रहा है। राजस्थान के मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अशोक गहलोत काफी एक ट्वीट सामने आया है। अशोक गहलोत ने साफ तौर पर कहा है कि सोचा नहीं था कि ये दोनों राहुल गांधी के खिलाफ इतने नीचे स्तर की भाषा बोलने लगेंगे। अपने ट्वीट में अशोक गहलोत ने लिखा कि श्री गुलाम नबी आजाद एवं श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया श्री राहुल गांधी के खिलाफ ऐसी निम्नस्तरीय भाषा बोलने लगेंगे ये किसी ने सोचा नहीं था। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेता

थक चुके हैं क्योंकि राहुल गांधी इतने हमलों के बावजूद जनता की आवाज उठाने से पीछे नहीं हटे हैं। गहलोत ने आगे कहा कि इसलिए कांग्रेस से गए इन नेताओं को टास्क दिया गया है। ये सब जिंदगीभर जिस विचारधारा से लडने की कसमें खाते थे आज भाजपा नेताओं के इशारे पर उसी फासीवादी विचारधारा के साथ खड़े हो गए हैं।सिंधिया ने साफ तौर पर कहा था कि पिछले कुछ दिनों में राहुल गांधी और कांग्रेसी पार्टी ने न्यायतंत्र पर दबाव और धमकी की विचारधारा के साथ कार्य किया है। राहुल पर हमला जारी रखते हुए सिंधिया ने कहा कि उन्होंने जिस अपनी निजी कानूनी लड़ाई को एक लोकतंत्र की कानूनी लड़ाई प्रेषित करने की कोशिश की है, उससे एक बात तो स्थापित हो चुकी है कि कांग्रेस पार्टी इस देश में लोकतंत्र के साथ खिलवाड़ करने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। वहीं, वहीं, आजाद ने कहा है कि इसमें कोई शक नहीं है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी काफी मेहनती हैं। साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा कि हम मोदी और भाजपा की अगर आलोचना करते हैं तो तारीफ भी करते हैं। हम 24 घंटे नींद से उठकर मोदी और भाजपा को गालियां नहीं देते। इसके साथ ही गुलाम नबी आजाद ने कहा कि कांग्रेस पार्टी में भी कुछ कमिया रही है। कांग्रेस उन गलतियों को ठीक करगी, ऐसी मेरी उम्मीद है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी का एक इतिहास रहा है। संघर्ष के दिनों में वह सबसे आगे रही है।

अमीर और अमीर होता जाता है, गरीब और गरीब-सिब्बल

नई दिल्ली। राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने शुक्रवार को सामाजिक न्याय के प्रति भाजपा की प्रतिबद्धता पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की टिप्पणी पर कटाक्ष किया। उन्होंने दावा किया कि इस सरकार के तहत अमीर अमीर हो जाते हैं और गरीब और अधिक गरीब हो जाते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को पार्टी के 44वें स्थापना दिवस पर भाजपा के सदस्यो संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने मुफ्त राशन योजना, स्वास्थ्य बीमा और अन्य कल्याणकारी उपायों का हवाला देते हुए कहा कि सामाजिक न्याय भाजपा के लिए विश्वास का एक लेख था, जबकि अन्य दलों ने समाज की मदद किए बिना विशेष परिवारों के हितों को आगे बढ़ाने के लिए तख्ती का इस्तेमाल किया।प्रधानमंत्री ने कहा था कि जहां भाजपा ने सोचा और बड़ा सपना देखा और फिर इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए खुद को समर्पित करने के लिए तैयार हो गई, वहीं विपक्षी दल छोटे लक्ष्य निर्धारित कर सकते थे और छोटे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक–दूसरे की पीठ थपथपा सकते

थे।एक ट्वीट में सिब्बल ने कहा कि पीएमरू बीजेपी सामाजिक न्याय के लिए जीती है और अक्षरश इसका पालन करती है।च तथ्यरू 1) 2012–2021 से बनाई गई संपत्ति का 40 प्रतिशत केवल 1 प्रतिशत आबादी के पास गया 2) 2022 में अडानी की संपत्ति में 46 प्रतिशत की वृद्धि हुई 3) 64 प्रतिशत जीएसटी नीचे के 50 प्रतिशत से आयाय 4 फीसदी टॉप 10 फीसदी से आए।यूपीए 1 और 2 के दौरान केंद्रीय मंत्री रहे सिब्बल ने पिछले साल मई में कांग्रेस छोड़ दी थी और समाजवादी पार्टी के समर्थन से एक स्वतंत्र सदस्य के रूप में राज्यसभा के लिए चुने गए थे। उन्होंने हाल ही में अन्याय से लडने के उद्देश्य से एक गैर–चुनावी मंच इंसाफ शुरू किया है।

अमित शाह ने साधा गांधी परिवार पर निशाना

कौशांबी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को दावा किया कि लोकसभा सदस्यता से राहुल गांधी को अयोग्य घोषित किए जाने को लेकर संसद की कार्यवाही बाधित करने के लिए देश विपक्षी दलों को माफ नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि गांधी को कांग्रेस नीत संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (सरकार) द्वारा लाए गए कानून के आधार पर संसद सदस्यता से अयोग्य करार दिया गया। शाह ने लोगों से समाज के सभी वर्गों के सर्वांगीण कल्याण के लिए 2024 में एक बार फिर से नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने का आह्वान किया। शाह कौशांबी महोत्सव की शुरुआत करने के बाद जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, राहुल गांधी को अयोग्य करा दिए जाने लेकर संसद की कार्यवाही बाधित करने के लिए देश विपक्षी दलों को माफ नहीं करेगाकृ लोकतंत्र नहीं जातिवाद और वंशवादी राजनीति खतरे में हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उपमुख्यमंत्री–केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की राज्य इकाई के अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

पीएम मोदी 8 अप्रैल को जाएंगे हैदराबाद

सिकंदराबाद। तिरुपति वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को दिखाएंगे हरी झंडीहैदराबाद, 07 अप्रैल (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शनिवार यानी 8 अप्रैल को तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में सिकंदराबाद–तिरुपति वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाने के अलावा यहां 11,300 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे।

आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि शहर के दौरे के दौरान पीएम मोदी परेड ग्राउंड में एक जनसभा में भी हिस्सा लेंगे।वह यहां एम्स बीबीनगर और पांच राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला रखेंगे। वह सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास की आधारशिला भी रखेंगे और रेलवे से संबंधित अन्य विकास परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित करेंगे। सिकंदराबाद–तिरुपति वंदे भारत एक्सप्रेस, जो हैदराबाद को भगवान वेंकटेश्वर, तिरुपति के निवास स्थान से जोड़ती है, तीन महीने की छोटी अवधि के भीतर तेलंगाना से शुरू की जाने वाली दूसरी वंदे भारत ट्रेन है। ट्रेन दोनों शहरों के बीच यात्रा के

समय को लगभग साढ़े तीन घंटे कम कर देगी और तीर्थयात्रियों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद होगी।720 करोड़ रुपये की लागत से सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास की योजना इस तरह बनाई जा रही है कि यह विश्व स्तरीय सुविधाओं और सौंदर्यपूर्ण रूप से डिजाइन किए गए प्रतिष्ठित स्टेशन भवन के साथ बड़े पैमाने पर बदलाव से गुजरेगा। पुनर्विकसित स्टेशन में एक ही स्थान पर सभी यात्री सुविधाओं के साथ डबल–लेवल स्पेशियस रूफ प्लाजा होगा, साथ ही यात्रियों को रेल से अन्य साधनों में निर्बाध स्थानांतरण प्रदान करने के लिए मल्टी–मोडल कनेक्टिविटी भी होगी।रेलवे की एक प्रेस विज्ञप्ति के मुताबिक, यात्रा के दौरान पीएम मोदी हैदराबाद–सिकंदराबाद जुड़वां शहर क्षेत्र के उपनगरीय खंड में 13 नई मल्टी–मोडल ट्रांसपोर्ट सर्विस (एमएमटीएस) सेवाओं को हरी झंडी दिखाएंगे, जो यात्रियों को तेज, सुविधाजनक और आरामदायक यात्रा विकल्प प्रदान करेंगे।प्रधानमंत्री सिकंदराबाद–महबूबनगर परियोजना के दोहरीकरण और विद्युतीकरण को भी राष्ट्र को समर्पित करेंगे।

85 किमी से अधिक की दूरी तक फैली यह परियोजना लगभग 1410 करोड़ रुपये की लागत से पूरी की गई है।यह परियोजना निर्बाध कनेक्टिविटी प्रदान करेगी और ट्रेनों की औसत गति बढ़ाने में सहायता करेगी। परेड ग्राउंड में सार्वजनिक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री एम्स बीबीनगर, हैदराबाद की आधारशिला रखेंगे।

इसको 1350 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से विकसित किया जा रहा है। एम्स बीबीनगर की स्थापना तेलंगाना के लोगों को उनके दरवाजे पर व्यापक, गुणवत्तापूर्ण और समग्र तृतीयक देखभाल स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।पीएम मोदी 7,850 करोड़ रुपये से अधिक की राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला भी रखेंगे।

ये सड़क परियोजनाएं तेलंगाना और आंध्र प्रदेश दोनों के सड़क संपर्क को मजबूत करेंगी और क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास में सहायता करेंगी। मोदी का उसी दिन हैदराबाद दौरे के बाद तमिलनाडु के लिए रवाना होने का कार्यक्रम है।

लोकतंत्र को कुचल रहे हैं, राज्यपाल की नियुक्तियों और कार्यशैली को लेकर चिदंबरम का केंद्र पर हमला

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम ने शुक्रवार को तमिलनाडु के राज्यपाल आर एन रवि पर उनकी उस टिप्पणी के लिए निशाना साधा जिसमें उन्होंने कहा था कि राज्य विधानमंडल द्वारा पारित विधेयकों को रोकना उनके विवेक पर निर्भर करता है।

साथ ही चिदंबरम ने यह आरोप भी लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा नियुक्त राज्यपाल अपनी शक्तियों का उल्लंघन कर 'लोकतंत्र को कुचल रहे हैं। चेन्नई के राजभवन में 'थिंक टू डेयर कार्यक्रम की श्रृंखला के तहत प्रशासनिक सेवा के अभ्यर्थियों के साथ बातचीत के दौरान, रवि ने राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए विधानसभा से पारित विधेयकों को उनके पास भेजने पर टिप्पणी की थी और कहा था कि 'राज्यपाल के पास तीन विकल्प हैंरू सहमति दें, रोक दें– जिसका अर्थ है कि विधेयक खत्म हो चुका है– जिसे उच्चतम न्यायालय और संविधान अस्वीकार

करने के लिए सभ्य भाषा के रूप में उपयोग करते हैं। और तीसरा, विधेयक को राष्ट्रपति के लिए आरक्षित करें। रवि ने कहा था कि यह राज्यपाल का विवेकाधिकार है। चिदंबरम ने कहा कि तमिलनाडु के राज्यपाल ने विधायिका द्वारा पारित विधेयकों को मंजूरी नहीं देने को 'विचित्र और अजीबोगरीब परिभाषा दी है और कहा है कि इसका मतलब है कि 'विधेयक खत्म हो चुका है। राज्यपाल की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए चिदंबरम ने कहा, ''वास्तव में, जब कोई राज्यपाल बिना किसी वैध कारण के सहमति नहीं देता है, तो इसका मतलब है कि 'संसदीय लोकतंत्र मर चुका है। राज्यपाल विधेयक को मंजूरी देने या रोकने या वापस करने के लिए बाध्य है। अगर विधेयक फिर से पारित हो जाता है, तो राज्यपाल सहमति देने के लिए बाध्य है। उन्होंने कहा कि राज्यपाल केवल एक संवैधानिक पदाधिकारी है और प्रतीकात्मक प्रमुख है।

उन्होंने कहा कि राज्यपाल की शक्तियां मुख्यतः प्रतिबंधित हैं और अधिकांश मामलों में उनके पास कोई शक्तियां नहीं हैं। उन्होंने कहा, 'एक राज्यपाल मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर काम करने के लिए बाध्य है। अपनी शक्तियों का उल्लंघन कर भाजपा द्वारा नियुक्त राज्यपाल लोकतंत्र को कुचल रहे हैं।

रवि की टिप्पणी की तमिलनाडु में द्रमुक नीत सरकार ने भी आलोचना की है और कहा है कि मंजूरी में अनावश्यक देरी करना राज्यपाल की ओर से कर्तव्य में लापरवाही है।

'भाजपा अनिल का इस्तेमाल करके एक दिन फेंक देगी', बोले छोटे भाई अजीत एंटनी

नई दिल्ली। अनिल एंटनी के कांग्रेस छोड़कर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल होने के एक दिन बाद, ए के एंटनी के छोटे पुत्र अजीत ने शुक्रवार को कहा कि उनके भाई का फैसला ''आवेग में लिया गया था और भाजपा उनका इस्तेमाल करके उन्हें निकाल फेकेंगी। अजीत एंटनी ने यहां संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि अनिल ने अपने फैसले के बारे में परिवार को कोई संकेत नहीं दिया था और बृहस्पतिवार के घटनाक्रम के बारे में चौनलों पर समाचार ''फ्लैश देखकर उन्हें झटका लगा था। उन्होंने यह भी कहा कि नयी दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में अनिल को भाजपा की सदस्यता ग्रहण करते देख उनके पिता बहुत दुखी हुए। अजीत ने कहा, ''पापा (ए के एंटनी) काफी दुखी थेकृमैंने अपने जीवन में उन्हें इतना कमजोर कभी नहीं देखा।

उन्होंने आंसू नहीं बहाए, बस इतना ही कसर रह गई। उन्होंने कहा कि भाजपा में शामिल होने के लिए उनके भाई के पास अपने कारण होंगे और उन्हें कांग्रेस पार्टी के अज्ञात कार्यकर्ताओं की ओर से कई बार अपमानजनक कॉल आती थीं, और हो सकता है कि वह उससे आहत हो गए हों। अनिल के छोटे भाई ने कहा, मैंने सोचा था कि वह गुस्से में (कांग्रेस) पार्टी से दूर हो जाएंगे, लेकिन मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि वह भाजपा में शामिल हो जाएंगे। उनका यह फैसला पूरी तरह से अप्रत्याशित था। अनिल के भाजपा में शामिल होने के फैसले को बहुत आवेशपूर्ण फैसला बताते हुए अजीत ने कहा कि उन्हें विश्वास है कि वह अपनी गलतियां सुधारने के बाद कांग्रेस पार्टी में लौट आएंगे। अजीत ने एक सवाल के जवाब में कहा कि अगर उन्हें लगता है कि यह उनके राजनीतिक भविष्य के लिए अच्छा है तो वह भाजपा में बने रह सकते हैं। अनिल बृहस्पतिवार को राष्ट्रीय राजधानी में केंद्रीय मंत्रियों पीयूष गोयल और वी मुरलीधरन की उपस्थिति में भाजपा में शामिल हो गए। उसके कुछ घंटे बाद, भावुक ए के एंटनी ने अपने बेटे के फैसले को ''गलत करार दिया।

सम्पादकीय

आजादी से लोकतंत्र

मजबूत लोकतंत्र के लिये मीडिया की आजादी सर्वमान्य तथ्य है। इस तथ्य को एक बार फिर दोहराकर देश की शीर्ष अदालत ने सत्ताधीशों को आईना दिखाने का ही प्रयास किया है। शीर्ष अदालत ने मलयालम चौनल मीडिया वन पर लगे प्रतिबंध को हटाते हुए सरकार को यह नसीहत दी है। दरअसल, केंद्रीय सूचना व प्रसारण और गृह मंत्रालय ने इसे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये खतरा बताते हुए बीती 31 जनवरी को इस चौनल पर रोक लगायी थी। शीर्ष अदालत की पीठ ने यह भी कहा कि चौनल के शेयरधारकों का जमात–ए–इस्लामी हिंद से जुड़ाव का दावा चौनल के अधिकारों को प्रतिबंधित करने का वैध आधार भी नहीं है। मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डी.वाईध चंद्रचूड़ और जस्टिस हिमा कोहली की पीठ ने बुधवार को कहा कि सरकार मीडिया की आजादी पर अनुचित प्रतिबंध नहीं लगा सकती। ऐसा करने से लोकतंत्र में जनता की अभिव्यक्ति की आजादी बाधित होती है। कोर्ट ने माना कि सूचना माध्यमों की आजादी से ही मजबूत लोकतंत्र संभव है। शीर्ष अदालत ने इस सर्वविदित तथ्य को भी दोहराया कि मीडिया का दायित्व है कि वह सच को सत्ता के सामने लाये। साथ ही जनता के सामने वास्तविक तथ्य पेश करे ताकि जनता में तार्किक सोच से बेहतर विकल्प चुनने की सोच विकसित हो सके। सही मायनों में मीडिया की आजादी पर प्रतिबंध एक तरह से जनता की अभिव्यक्ति पर ही प्रतिबंध है। साथ ही कोर्ट ने यह भी कहा कि राजनीतिक विचारधारा से सामाजिक व आर्थिक मुद्दों का निर्धारण लोकतंत्र के लिये चुनौती पेश करने वाला है। वहीं सरकारों को चेताया कि राष्ट्रीय सुरक्षा की दलील देकर किसी भी तरह की आजादी पर प्रतिबंध लगाना अनुचित है। बिना तथ्यों के ऐसा करना लोकतंत्र के हित में नहीं है।

साथ ही यह भी कि राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर कानूनन हुए नागरिक सुधारों को बाधित नहीं किया जा सकता। इतना ही नहीं, कोर्ट ने केरल हाईकोर्ट द्वारा सरकार की ओर से लगाये गये प्रतिबंधों को जारी रखने वाले आदेश को भी खारिज कर दिया। शीर्ष अदालत का मानना था कि स्वस्थ लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की आजादी अपरिहार्य है। निस्संदेह, हाल के दिनों में सत्ताधीशों को रास न आने वाले मीडिया संस्थानों पर भृकुटि टेढ़ी करने के तमाम वाकये सामने आये हैं। मीडिया के प्रति सहिष्णुता का जो भाव आजादी के बाद की सरकारों में नजर आता था, वह अब नजर नहीं आता। कहीं न कहीं सरकारों की कोशिश रही है कि जनचेतना को प्रभावित करने वाले मुखर आलोचक संस्थानों पर येन–केन–प्रकारेण दबाव बनाया जाये ताकि वे सत्ताधीशों की इच्छा के अनुसार खबरों के प्रसारण करने को बाध्य हों। इसमें दो राय नहीं कि कुछ मीडिया संस्थानों द्वारा अपने आर्थिक हितों तथा राजनीतिक दल विशेष की विचारधारा से प्रभावित नीतियों के चलते पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा के उल्लंघन के मामले भी प्रकाश में आये हैं। लेकिन इसके बावजूद मीडिया का बड़ा वर्ग लोगों तक तथ्यों पर आधारित सूचना पहुंचाने के प्रयासों में निरंतर लगा रहा है। कई राज्यों में राजनीतिक दल व धर्म विशेष की विचारधारा वाले प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का दखल रहा है, लेकिन इसके बावजूद लोकतंत्र के व्यापक दायरे में मीडिया की आजादी समय की जरूरत है। सजग व स्वतंत्र मीडिया ही समाज में स्वस्थ व प्रगतिशील विचारधारा के पोषण में सहायक होता है। मीडिया को भी तटस्थता व निष्पक्षता के साथ सूचना संप्रेषण का दायित्व निभाना चाहिए। जब भी कोई मीडिया संस्थान मर्यादा की रेखा का उल्लंघन करता है और राजनीतिक दल या विचारधारा विशेष से प्रभावित होता है तो समाज में स्वतरू ही उनकी स्वीकार्यता को आंच आती है। ऐसी ही स्थिति में सरकारों को हस्तक्षेप के लिये मौका मिलता है। निस्संदेह, पत्रकारिता एक ऋषिकर्म की तरह होती है। बिना किसी आर्थिक प्रलोभन और नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए यदि प्रेस जिम्मेदारी से भूमिका निभाती है तो जनता का सहयोग भी मिलता है। सही मायनों में प्रेस की आजादी जनता की अभिव्यक्ति की ही आजादी है। मीडिया को भी भारतीय संविधान के तहत उतनी ही आजादी मिली है, जितनी कि एक आम आदमी को हासिल है।

मनीष तिवारी का पुनर्वास होगा!

पंजाब से कांग्रेस सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री मनीष तिवारी वैसे तो अब भी कांग्रेस के प्रवक्ता हैं लेकिन संचार विभाग की ओर से उनको प्रेस ब्रीफिंग में नहीं बुलाया जाता है। जब से उन्होंने कांग्रेस नेतृत्व पर सवाल उठाने वाले जी–23 नेताओं की चिट्ठी पर दस्तखत किया था तब से वे हाशिए में हैं। लेकिन अब कहा जा रहा है कि उनका पुनर्वास होने वाला है। बतौर प्रवक्ता मनीष तिवारी का पुराना स्टैट्स बहाल हो सकता है। यानी नियमित प्रेस ब्रीफिंग से लेकर मीडिया को बाइट देने या विशेष प्रेस कांफ्रेंस का जिम्मा उनको मिल सकता है। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे उनका अधिकतम इस्तेमाल करने के पक्ष में बताए जा रहे हैं।पिछले दिनों तिरूवनंतपुरम में विशेष प्रेस कांफ्रेंस के लिए उनको भेजा गया था। संसद की गतिविधियों में भी उनकी भूमिका बढ़ी है। उन्होंने राहुल गांधी को सजा सुनाए जाने और लोकसभा की सदस्यता समाप्त किए जाने के बाद काम रोको प्रस्ताव का नोटिस भी दिया था। केंद्र सरकार ने जब वन संरक्षण संशोधन विधेयक संसद की स्थायी समिति को नहीं भेजा तो तिवारी ने इसका विरोध किया। ध्यन रहे इस मंत्रालय की कमेटी के प्रमुख जयराम रमेश हैं, जो कांग्रेस के संचार विभाग के भी प्रमुख हैं। रमेश ने भी वन संरक्षण विधेयक संसद की स्थायी समिति को नहीं भेजने के विरोध में चिट्ठी लिखी है।

शिक्षा के बाजारों मे लूट

निजी स्कूलों की मनमानी 'परम स्वतंत्र सिर पर न कोई' वाली कहावत चरित्रार्थ कर रही है। कई राज्यों में स्कूलों की फीस में 15 फीसदी बढ़ौतरी से अभिभावक परेशान हैं। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के निजी स्कूलों ने अभिभावकों पर नया बोझ डाल दिया है। महंगाई के इस दौर में शिक्षा का बोझ सहना मुश्किल हो रहा है। निजी स्कूलों का कहना है कि फीस में बढ़ौतरी शिक्षा निदेशालय द्वारा तय नियमों के अनुसार ही की गई है। राज्य सरकारों की ओर से भी इस मामले में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जा रहा है। निजी स्कूल अमीर परिवारों के बच्चों की शिक्षा का केन्द्र बन गए हैं जबकि सरकारी स्कूल गरीबों की शिक्षा का केन्द्र बन गए हैं। शिक्षा की इस विषमता ने सामाजिक और ध्आर्थिक विषमता की खाई को और बढ़ा दिया है। इसका सबसे बड़ा कारण है शिक्षा का बाजारीकरण, जो समाज के लिए अभिशाप बन चुका है। किसी शॉपिंग मॉल की तरह बने निजी स्कूल मोटी फीस वसूल कर खर्चीले उपभोक्ता तैयार करने का काम कर रहे हैं। दरअसल शिक्षा के बाजारीकरण नेध शिक्षा की आत्मा को मार कर रख दिया है। स्कूली शिक्षा के माध्यम से ही हम व्यक्तित्व, मानसिक कुशलता, नैतिक और शारीरिक शक्ति का विकास करना सीखते हैं। बिना उचित शिक्षा के एक व्यक्ति अपने जीवन के सभी शैक्षिक लाभों से वंचित रह जाता है। शिक्षा निजी और पेशेवर जीवन में सफलता की इकलौती कुंजी है। शिक्षा हमें विभिन्न प्रकार का ज्ञान और कौशल प्रदान करती है। यह सीखने की घनिरंतर, धीमी और सुरक्षित प्रक्रिया है जो हमें ज्ञान प्राप्त करने में मदद करती है। यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो हमारे जन्म के साथ ही शुरू हो जाती है और हमारे जीवन के साथ ही खत्म होती है। हमें अपने अन्दर पूरे जीवन भर अपने अध्यापकों, अभिभावकों, परिवार के सदस्यों और हमारे जीवन से संबंधित अन्य व्यक्तियों से कुछ ना कुछ सीखने की आदत डालनी चाहिए। हम एक अच्छा व्यक्ति बनने, घर, समाज, समुदाय और दोस्तों में रहने के लिए कुछ ना कुछ सीखते रहते हैं। स्कूल जाना और घशिक्षा ग्रहण करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और जो सफलता प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए बहुत आवश्यक है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पूरा होता दिखाई नहीं दे रहा। इसका असर बच्चों के स्वभाव में स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है। अभिभावक बच्चों को शुरू से ही नोट उगलने वाली एटीएम मशीन के रूप में देखना चाहते हैं। कोई बच्चों की प्रतिभा का मूल्यांकन करना नहीं चाहता। प्रवेश शुल्क, किताबें और यूनीफार्म के नाम पर निजी संस्थान मोटी कमाई कर रहे हैं। निजी संस्थान प्रवेश फार्म में अभिभावक के पेशे को देखकर एडमिशन तय करते हैं। शिक्षा से जुड़े बहुत सारे सवाल व्यवस्था के सामने यक्ष प्रश्न बने हुए हैं। संविधान में निर्दिष्ट समानता का अधिकार बेमानी लगता है। निजी स्कूलों में एयरकंडीशन, सीसीटीवी कैमरे, लग्जरी बसें हर अभिभावक का सपना है। साधारण तथा मध्यवर्गीय परिवार बड़े स्कूलों को दूर से ही टकटकी लगाए देखते हैं। महानगरों में ही नहीं ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा का व्यवसायीकरण हो चुका है। कोरोना काल के दौरान आर्थिक संकट झेल रहे हजारों परिवारों ने अपने बच्चों को निजी स्कूलों से हटा लिया। दरअसल यह एक धारणा है कि महंगे स्कूलों में बेहतर शिक्षा दी जाती है लेकिन मध्यमवर्गीय परिवार भी महंगे स्कूलों में अपने बच्चे भेजने में असमर्थ हैं। महंगे स्कूल बच्चों और अभिभावकों पर परफॉर्मर्स को लेकर दबाव बनाए रखते हैं। इस दबाव ने बच्चों से उनकी अबोधता और मौलिकता छीन ली है। यह समाजशास्त्रीय अपराध है, जिसके लिए अभिभावक भी दोषी हैं। आज अभिभावकों की इच्छाओं का दोहन बच्चों के बेहतर भविष्य के सपने दिखाकर किया जा रहा है। मां–बाप अपने बच्चों को 'असाधारण' देखना चाहते हैं। असाधारणता एक साइक्लॉजीकल समस्या का रूप ले चुकी है जो बच्चों और अभिभावकों में अवसाद परोस रही है। बच्चों को समझने की बजाय सारा जोर बच्चों को समझाने पर है। बच्चों के नाम पर बाजार हमारे जज्बातों का आर्थिक दोहन करने में लगा है। व्यवस्था इससे पैदा हो रही समस्याओं और मनोविकारों से मुंह चुरा रही है। सवाल है हम हासिल करना चाह रहे हैं, वह हासिल होता दिख नहीं रहा। शिक्षा का मौलिक अधिकार प्रत्येक बच्चे को ध्मिले, इसके लिए शिक्षा सहज और सस्ती उपलब्धा होनी चाहिए। शिक्षा गुणवत्तापूर्ण तो हो ही साथ ही संस्कार युक्त भी होनी चाहिए। शिक्षा के उद्देश्य तभी पूरे होंगे जब अमीर और गरीब के बच्चे एक ही स्कूल में पढ़ेंगे। सबसे बड़ी समस्या यह है कि निजी स्कूल वे लोग चला रहे हैं जिनका शिक्षा से दूर–दूर तक कोई संबंध नहीं। उन्होंने व्यापार की तरह लाखों–करोड़ों का निवेश कर रखा है ताकि मोटी कमाई हो सके। शिक्षा के बाजार में लूट मची हुई है। अगर ऐसा ही चलता रहा तो नई शिक्षा नीति का कोई लाभ नहीं घमिलने वाला। शिक्षा व्यवसाय नहीं एक पवित्र मिशन है, इसलिए इसे मिशन बनाने के लिए सरकारों और विद्वानों को मिलकर कोई ठोस समाधान निकालना चाहिए। अगर हर बच्चे को सहज और सस्ती शिक्षा मिले तो ही वह उच्च शिक्षा में मुकाम हासिल कर पाएगा।**–आदित्य नारायण**

संसद में वक्त और धन की बर्बादी

गुरुवार 6 अप्रैल को संसद भवन के सामने विपक्षी दलों के कई सांसद हाथों में तिरंगा लिए जिस तरह चले जा रहे थे, उस दृश्य को देखकर फिल्मों में दर्शाए गए वे प्रसंग याद आ गए, जिनमें गुलामी से मुक्ति पाने के लिए छटपटाते देश के लोग हाथों में परचम और होठों पर आजादी के तराने लिए बेखौफ निकल पड़ते हैं। पर्दे पर आजादी के संघर्ष को देखना अलग बात है, यह हमें भारत में अंग्रेजी राज की याद दिलाता है और ये अहसास गहरा करता है कि कितने मुश्किलों से आजादी मिली है। इसके लिए कितने लोगों ने कुर्बानियां दी हैं।

लेकिन जिस समय सरकार आजादी के 75 साल को अमश्त महोत्सव नाम देकर भव्य आयोजनों में लगी हुई है, उस वक्त विपक्षी सांसदों का तिरंगा लेकर निकलना विचारणीय और चिंतनीय मसला है कि लोकतंत्र को किस हाल में पहुंचा दिया गया है। आज विपक्ष के सांसदों ने संसद से विजय चौक तक जो तिरंगा मार्च निकाला, उसमें यही नारे लगाए कि लोकतंत्र की हत्या बंद करो। लोकतंत्र हाड़–मांस का कोई जीव नहीं है, लेकिन भारत जैसे देश के लिए लोकतंत्र धड़कनों के समान है। जब तक लोकतंत्र धड़कता रहेगा, देश जीवित रहेगा। और इस धड़कन को प्राणवायु संसद से मिलती है। इसी संसद में देश भर के निर्वाचित प्रतिनिधि साथ में बैठते हैं, बहसें करते हैं, एक–दूसरे पर आरोप लगाते हैं, सवाल पूछते हैं, जवाब देते हैं और तमाम तरह के मंथन के बाद विधेयकों को पारित किया जाता है, जिनसे देशहित और जनहित का काम सधता है। लेकिन इस बार बजट सत्र सरकार के अड़ियल रुख के कारण हंगामे की भेंट चढ़ गया। पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च नामक थिंक टैंक के अनुसार, इस बार के बजट सत्र में लोकसभा में 133.6 घंटे काम होना था, लेकिन केवल 45 घंटे से थोड़ा ही अधिक कामकाज हुआ जबकि राज्यसभा में 130 घंटे की निर्धारित अवधि के मुकाबले 31 घंटे से थोड़ा ही अधिक कामकाज हुआ। लोकसभा में 34.28 प्रतिशत और राज्यसभा में 24 प्रतिशत ही काम हुआ। बाकी पूरा वक्त शोर–शराबे, विरोध, नारेबाजी में गुजर गया। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने बजट सत्र के दौरान हुए कामकाज का जो ब्यौरा प्रस्तुत किया उसके मुताबिक सदन में आठ विधेयक पेश किए गए और पांच विधेयक पारित हुए हैं। संसद में भाजपा का बहुमत है तो विधेयकों को पारित करने में यूं भी कोई अड़चन नहीं आती, लेकिन सवाल ये है कि इन विधेयकों पर कितनी देर चर्चा की गई और विपक्ष की इसमें कितनी भागीदारी रही। क्योंकि विपक्ष बजट सत्र में लगातार जिस मांग पर अड़ा रहा, उस पर तो सरकार अब भी मौन ही है। हिंडनबर्ग रिसर्च फर्म की अडानी समूह पर वित्तीय अनियमितताओं के आरोप वाली रिपोर्ट के बाद से विपक्ष सरकार से यही मांग कर रहा है कि इस मसले पर एक संयुक्त संसदीय समिति बनाकर जांच कराई जाए। लेकिन सरकार इसके लिए किसी भी तरह तैयार नहीं हो रही, बल्कि अडानी शब्द के उच्चारण से ही बचती दिख रही है। विपक्ष की मांग के जवाब में सत्तारुढ़ भाजपा के लोग राहुल गांधी के ब्रिटेन में दिए भाषण पर माफी की मांग करते रहे। राहुल गांधी ने माफी तो नहीं मांगी, इस बीच मानहानि मुकदमे में उन्हें सजा हुई और लोकसभा की सदस्यता खत्म कर दी गई। कांग्रेस विरोधियों के लिए बजट सत्र का सबसे बड़ा हासिल शायद यही है कि अब राहुल गांधी संसद में नहीं हैं। लेकिन उन्होंने जो सवाल वहां उठाए थे, वे अब भी अनुत्तरित संसद के गलियारों में गूंज ही रहे हैं। संसद के बाहर भी राहुल गांधी लगभग हर रोज सरकार से अडानी मुद्दे पर सवाल पूछ ही रहे हैं। लोकतंत्र में यह बड़ी अजीब बात लग रही है कि सत्तारुढ़ दल एक ऐसे मुद्दे पर मुंह सिले हुआ है, जिस के बारे में जानना देश के लोगों का हक है। सरकार के इस अड़ियल रुख के खिलाफ ही आज विपक्षी दलों ने तिरंगा यात्रा निकाली, जिसमें कांग्रेस के साथ द्रमुक, सपा, राजद, राकांपा और वाम दल शामिल हुए। मल्लिकार्जुन खड़गे ने इस मौके पर कहा कि 12 मिनट में बिना चर्चा के 50 लाख करोड़ रुपये का बजट पास हो गया। अडानी की वजह से सत्तारुढ़ दल ने संसद का बजट सत्र नहीं चलने दिया। मोदी सरकार अडानी को बचाने में जुटी है। यही आरोप अन्य विपक्षी दलों के सांसदों ने भी लगाया। श्री खड़गे ने सरकार पर संसद की बर्बादी के लिए जिम्मेदार होने का आरोप लगाते हुए कहा कि मोदी सरकार लोकतंत्र की बात बहुत करती है, लेकिन बात पर अमल नहीं करती। कांग्रेस अध्यक्ष श्री खड़गे ने जो बातें कही हैं वे केवल सियासी आरोप नहीं हैं, बल्कि उनमें जो फिक्र छिपी हुई है, उसे समझने की जरूरत है। लोकतंत्र की बात करना और उसे धरातल पर उतारना दो अलग–अलग बातें हैं। साल–दर–साल हम यही देखते आ रहे हैं कि लोकतांत्रिक अधिकारों की आवाज उठाने वालों को सड़कों पर उतरना पड़ रहा है। आम जनता से लेकर अब विपक्षी नेताओं को भी सरकार के सामने अपनी बात रखने के लिए सड़क पर आना पड़ा है। मदर ऑफ डेमोक्रेसी जैसी बातें भी जुमले में तब्दील होती जा रही हैं, यह दुखद है। 17वीं लोकसभा का 11वां सत्र हंगामे से गुजरता हुआ अनिश्चित काल के लिए स्थगित हो गया। विपक्ष के सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष की चाय पीने से इन्कार कर दिया। संसद के एक दिन के कामकाज में करोड़ों रुपए खर्च होते हैं, सोचने की बात है कि संसद ठप्प होने के कारण कितने करोड़ रूपए स्वाहा हो गए। जनता के धन और वक्त दोनों की बर्बादी हो रही है। लेकिन हम आजादी का अमश्त चखने में मगन हैं।

आज का राशिफल

मेष :– कोई छोटी बात भी परिवार में तनाव का कारण बन सकती है। महत्वपूर्ण प्रयत्न की सार्थकता हेतु नये उत्साह का संचार होगा। सामाजिक गतिविधियों में क्रियाशीलता बढ़ेगी। भावनात्मक अभिव्यक्ति से संबंधा मधुरत होंगे।

वृषभ :– हर घटना से आपको सीख लेने की जरूरत है। नये क्षेत्र में निवेश से पूर्व जानकार लोगों से विचार–विमर्श करें। भविष्य के प्रति निराशाजनक विचारों को मन पर हावी न होने दें। नये व्यावसायिक यात्राओं का योग है।

मिथुन :– निकट संबंधों में मधुर संवाद से अपनी सुंदर छबि बनायें। कुछ महत्वपूर्ण अभिलाषाओं की पूर्ति होने के आसार हैं। सामान्य दिनचर्या के साथ बीत रहे जीवन में उत्साह का अभाव रहेगा। घर में खुशहाली होगी।

कर्क :– भविष्य संबंधी कुछ चिंताएं उत्पन्न होंगी। किसी कार्य को छोटा–बड़ा समझने के बजाए अपने कर्त्तव्यों का सही ढ़ंग से निर्वहन करें। वर्तमान कार्य से मन असंतुष्ट रहेगा। जरूरी कायरे में आलस्य का त्याग करें।

सिंह :– पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति हेतु चिंता उत्पन्न होगी। अपने स्वास्य के प्रति लापरवाही न बरतें एवं जीवन साथी के स्वास्य के प्रति भी ध्यान दें। किसी बड़े आयोजन हेतु समुचित साधन लिए मन प्रयत्नशील होगा।

कन्या :– परिवार की छोटी–छोटी बातों बाहरी लोगों से न कहें। भावना से उद्वेलित मन संबंधियों के सुख–दुख के प्रति चिंतित होगा। किसी नयी दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य रंग लायेगी। रोजगार में व्यस्तता रहेगी।

तुला :– समय के साथ समझौता करके चलने का प्रयास करें। कार्यक्षेत्र को ही अपनी पूजा समझें और स्वयं को उसी ओर केंद्रित करें। पत्नी के साथ मधुर वणी का प्रयोग करें। रोजगार में लाभकारी स्थिति रहेगी।

वृश्चिक :– स्वयं को सही दिशा और लक्ष्य की ओर केंद्रित करें तभी जीवन में सही प्रगति कर सकते हैं। किसी पुराने संबंध के प्रति विशेष निकटता की अनुभूति करेंगे। ग्रहों की अनुकूलता से अवरोधित कार्य हल होंगे।

धनु :– किसी भी प्रयास में आर्थिक अभाव अवरोधक होगा। साहस व बुद्धिमत्ता से पुरानी समस्याओं पर विजय प्राप्त कर सुख की अनुभूति करेंगे। विषम स्थितियों के मध्य परिश्रम व लगन से प्रगति की ओर अग्रसर होंगे।

मकर :– बुद्धिमत्ता व परिश्रम का मिले–जुले संयोग का भरपूर लाभ उठाएंगे। आर्थिक क्षेत्र में लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। सफलताएं आंतरिक क्षमताओं का एहसास कराएंगी। संतान संबंधी दायित्वों की पूर्ति होगी।

कुंभ :– शासन–सत्ता में व्यस्तता बढ़ेगी। मन आर्थिक सुदृढ़ता हेतु चिंतित होगा। सामाजिक सक्रियता से मान–प्रतिष्ठा बढ़ेगी। राजनीति को ग्रहों की अनुकूलता का लाभ मिलेगा। परिजनों के सुख–दुख के प्रति मन चिंतित होगा।

मीन :– महत्वाकांक्षी अभिलाषाएं मन में असन्तुष्ट पैदा करेंगी। तामसिक विचारों को मन से दूर ही रखें। विपरीतलिंगी संबंधों के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में व्यय अपेक्षित है।

राष्ट्र निर्माण में सनातनी शिक्षा और संस्कृति महत्वपूर्ण

भारत में प्रागैतिहासिक वैदिक तथा सनातनी शिक्षा तथा ज्ञान का स्वरूप बड़ा ही विस्तश्त है। हमें अपनी वैदिक सनातनी परंपराओं शिक्षा के विराट स्वरूप एवं संस्कृति पर सदैव गर्व होना चाहिए। भारत को भारतवर्ष भी आदिकाल की सांस्कृतिक शिक्षा और विशाल ज्ञान के भरपूर स्रोतों के कारण ही कहा जाता रहा है। भारत के ऋषि, मुनि, गौतम और अनेक संस्कृत के शिक्षकों ने भारत भूमि को न सिर्फ गौरवशाली बनाया बल्कि ऐतिहासिक रूप से इसे विश्व में सर्वोपरि स्थान दिलाया है। भारत के गौरव को और ऊंचा उठाने में स्वामी विवेकानंद जी की शिकागो यात्रा और उन के शक्तिशाली व्याख्यान ने द्विगुणित करने की भूमिका निभाई है। भारतीय वेदों और संस्कृति ने वैश्विक स्तर पर नए नए आयाम का सश्जन किया हैस वैसे भी जीवन परिवर्तन का पर्याय है एवं विकास का स्वरूप हैस यह सर्वकालीन सत्य है कि शिक्षा एवं ज्ञान का महत्व हर संस्कृति, सभ्यता और मानवीय समुदाय के जीवन में एक प्रकाश पुंज की तरह उन्हें विकास की दिशा दिखाते हुए आया हैस जिस देश की भाषा जितनी समश्द्ध होगी उस देश की सभ्यता संस्कृति और ज्ञान उत्तम शिखर पर होगा और विकास की नई नई धाराएं बहेगीस मानवीय विकास के साथ मनुष्य को अधिक परिपक्व को समझदार तथा समश्द्ध बनाने में शिक्षा,भाषा, ज्ञान और साहित्य का सर्वाधिक महत्व रहा हैस शिक्षा चाहे आपके परिवार से प्राप्त हुई हो, स्कूल कॉलेज अथवा किसी शिक्षण संस्थान से प्राप्त हुई हो या भारतीय संस्कृति के वैदिक शास्त्रों से प्राप्त हुई हो, शिक्षा का मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में बड़ी अहम भूमिका होती हैस शिक्षा भी समाज संस्कृति एवं सभ्यताओं के साथ परिवर्तनशील तथा प्रगतिशील है। शिक्षा, ज्ञान तथा संस्कृति और कला साहित्य को देश और विदेश की सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता है। यह असीमित भंडार है एवं इसमें आकाशीय ऊंचाइयां भी शामिल रहती हैंस शिक्षा और ज्ञान न तो गहराइयां न ही नापी नजा सकती है, और ना ही इसकी ऊंचाई को देखा जा सकता है। पूर्वी सभ्यता जहां अध्यात्म, वेद ,पुराणों पर अवलंबित है, वहीं पश्चिमी सभ्यता ज्ञान विज्ञान नए नए अविष्कार और आकाश की अनछुई कई बातों को उजागर करने वाली है। ऐसी शिक्षा तथा ज्ञान के कारण मानव चंद्रमा पर पहुंच कर एक नई गाथा लिख पाया हैस वस्तुतः पूर्व तथा पश्चिम ज्ञान विज्ञान तथा शिक्षा के मामले में एकाकार हो चुका है कोई भी भेदभाव या विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती हैस पूरी सभ्यता ने जहां पाश्चात्य दर्शन से नए नए अविष्कारों हवाई जहाज, इंजन, ग्रामोफोन, रेडियो एवं नई नई टेक्नोलॉजी को अपनाया है वहीं पश्चिमी दर्शन ने भारती ज्ञान विज्ञान संस्कार आयुर्वेद योग धर्म दर्शन को अपना कर अपनी जीवनशैली में शांति तथा सौभाग्य स्थापित किया हैस यह सब शिक्षा भाषा एवं ज्ञान के बदौलत पूर्व और पश्चिम का मेल संभव हो पाया हैस शिक्षा और भाषा सदैव ही अज्ञानता के तमस में एक प्रकाश पुंज की तरह देदीप्यमान होता रहा है, नवजीवन की विकास धारा में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया हैस हमारे कई धर्मों में जिनमें जैन ,बौद्ध दर्शन, नव्य वेदांत तथा भारतीय संस्कृति के नवीन चिंतन के सामने आने से नवयुग की कल्पना को साकार किया है। पश्चिम के कई विद्वान और चिंतक जिनमें प्लूटो, अरस्तु, सुकरात, कार्ल मार्क्स, लेनिन ने अनेक विकास के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है। जिसका पूरे विश्व ने खुले दिल से स्वागत किया एवं विकास की नई नई की इबारत लिखी है, दूसरी ओर भारत की संस्कृति, सभ्यता और समाज में सदैव आवश्यक सुधार तथा नई नई बुद्धिमता पूर्ण युक्तियों को अपने में आत्मसात करने की एक अलग क्षमता रही है, और विकास का मूल मंत्र भी परिवर्तनशील जीवनशैली ही है स राजनीति तो सदैव परिवर्तन पर अवलंबित रहती है।

स्वतंत्रता के पहले तथा बाद में राजनीतिक घटनाक्रम जिस नव परिवर्तन युग की तरफ अग्रसर हुए हैं वह अत्यंत उल्लेखनीय हैस भारतीय सभ्यता समाज और संस्कृति जितनी जटिल तथा गूढ है उसको जितना समझा जाए, उसका जितना अध्ययन किया जाए तो उससे नवीन बातें समझ में आती है, और उसके नए नए अर्थ हमारे सामने आते हैं, जिसका बहु आयामी उपयोग हम अपनी जीवनशैली में परिवर्तन करने के लिए सदैव कर सकते हैं। स्वतंत्रता के बाद तो भारत देश ने ज्ञान भाषा तथा संस्कृति में अनेक परिवर्तन किए गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बोस आदि ने अपनी किताबों में नव परिवर्तन के नए–नए आयामों तथा जीवन शैली के सत्य के साथ प्रयोग को एक नया आयाम दिया है और भारत देश को नए स्वरूप में विश्व में पहचान दिलाई है। पाश्चात्य ज्ञान से हमें अपने आडंबर एवं अंधविश्वास तथा शिक्षा पर विजय प्राप्त करने में काफी मदद प्राप्त हुई है। भारतीय संस्कृति की कई भ्रांतियों को भी हमने ज्ञान तथा भाषा के नवीन प्रयोगो से समाज से दूर किया है। दिन प्रतिदिन जीवन की कार्यशैली में हम यह महसूस करते हैं कि शिक्षा भाषा तथा ज्ञान हमें यह महसूस कर आते हैं कि हम अभी तक कितने पीछे हैं एवं हमें कितने ज्ञान की और आवश्यकता है। हालांकि ज्ञान का कोई और झोर नहीं होता, ज्ञान तथा भाषा एक समश्द्ध भंडार है, उसमें आप जितना सीख सकते हैं ज्ञान ले सकते हैं वह अत्यंत लघु होता है। तो हमेशा हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम पल प्रतिपल कुछ ना कुछ हर व्यक्ति, हर समाज, हर सभ्यता से सीखने का प्रयास करें ,क्योंकि ज्ञान भाषा एवं संस्कृति हमें सदैव समृद्ध विकासशील एवं परिवर्तनशील बनाती है और परिवर्तनशील जीवन ही एक नई ऊर्जा, आशा और विकास को जन्म देती है।**–संजीव ठाकुर**

मानव अधिकारों की चिंता

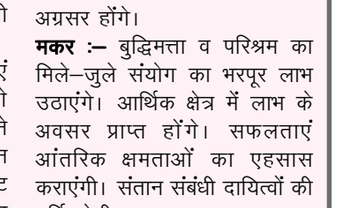

अंतरराष्ट्रीय कानूनों के तहत किसी संकट में पड़े देश की मदद करना सरकारों और वित्तीय संस्थानों का दायित्व है। लेकिन यह मदद इस रूप में दी जाना चाहिए, जिससे मानव अधिकारों के लिए खतरा पैदा ना हो।वित्तीय संकट में फंसे किसी देश को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) जैसी सख्त शर्तों पर ऋण देता है, वह पहले से काफी विवादास्पद रहा है। लेकिन आईएमएफ के इस रुख के खिलाफ अब तक सवाल आम तौर पर वामपंथी संगठन उठाते थे। यह संभवतः पहला मौका है, जब तो पश्चिमी मानव अधिकार संगठनों ने इसे मुद्दा बनाया है। पहले एमनेस्टी इंटरनेशनल श्रीलंका पर लगी गई आईएमएफ की शर्तों पर चिंता जताई और उसके बाद ह्यूमन राइट्स वॉच ने भी श्रीलंका में आईएमएफ के आर्थिक सुधार कार्यक्रम पर सवाल उठाए हैं। ह्यूमन राइट्स वॉच ने कहा है कि नीतियां ऐसी अपनाई जानी चाहिए, जिनसे श्रीलंका में आम जन के आर्थिक और सामाजिक अधिकारों का और क्षरण ना हो। इसके पहले एमनेस्टी इंटरनेशनल ने कहा था कि आईएमएफ की शर्तों को लेकर वह इस अंतरराष्ट्रीय संस्था के अधिकारियों से बातचीत करेगा और उन्हें अपनी चिंता बताएगा।ह्यूमन राइट्स वॉच ने श्रीलंका आईएमएफ एक ऋण से अधिकारों के क्षरण का खतराद्य शीर्षक के साथ एक बयान जारी किया। बयान में कहा गया है– सरकारी भ्रष्टाचार और टैक्स नियमों से धनी लोगों को लाभ हुआ, जो श्रीलंका के आर्थिक संकट का प्रमुख कारण है।इस कारण श्रीलंका के लोगों को अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। उन्हीं लोगों पर और बोझ नहीं डाला जाना चाहिए।द्य विशेषज्ञों के बीच भी आम राय यही है कि श्रीलंका में आर्थिक संकट दशकों तक अपनाई गई गैर–जिम्मेदाराना मौद्रिक नीति, सब्सिडी के गलत इस्तेमाल और कुशासन का परिणाम है। इसकी सबसे अधिक मार आम जन पर पड़ी है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि आईएमएफ की शर्तों की मार भी उन्हीं लोगों को झेलनी पड़ रही है। अब ह्यूमन राइट्स वॉच ने कहा है कि अंतरराष्ट्रीय कानूनों के तहत किसी संकट में पड़े देश की मदद करना सरकारों और वित्तीय संस्थानों का दायित्व है। लेकिन यह मदद इस रूप में दी जाना चाहिए, जिससे मानव अधिकारों के लिए खतरा पैदा ना हो। स्पष्टतरू मानव अधिकार संगठनों की इस पहल का स्वागत किया जाएगा। जरूरत ऐसे कथित आर्थिक सुधारों का असली चेहरा सामने लाने की है, जो आम जन की कीमत पर समृद्ध वर्गों के हित साधती हैं।

लखनऊ की जानी मानी सामाजिक कार्यकर्ता सौम्या भट्ट आम आदमी पार्टी में शामिल

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ । आप के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की नीतियों से प्रभावित होकर उत्तर प्रदेश के लखनऊ निवासी जानी मानी सामाजिक कार्यकर्ता सौम्या भट्ट ने शुक्रवार को आम आदमी पार्टी दिल्ली प्रदेश कार्यलय में आप का दामन थाम लिया। ष्आपष् के वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने पार्टी मुख्यालय में सौम्या भट्ट को टोपी और पटका पहनाकर ष्आपष् परिवार में शामिल कराया। इस दौरान सौम्या भट्ट ने कहा कि सीएम अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में दिल्ली सरकार द्वारा लागू की जा रही जन कल्याणकारी योजनाओं और शिक्षा क्षेत्र में हुई अभूतपूर्व क्रांति से प्रभावित होकर आम आदमी पार्टी में शामिल हो रही हूं। इस मौके पर पार्टी के नेता वैभव महेश्वरी भी मौजूद रहे.इस अवसर पर वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि आज आम आदमी पार्टी परिवार के लिए खुशी का विषय है कि लखनऊ से शिक्षण संस्थानों और सामाजिक कार्यों से अपना रिश्ता रखने वाली जानी मानी सामाजिक कार्यकर्ता सौम्या भट्ट

इस परिवार में शामिल हुई हैं। माया फाउंडेशन के नाम से इनकी अपनी संस्था है जो शिक्षा और पर्यावरण के क्षेत्र में काफी काम कर रही है। सौम्या भट्ट ने एमिटी विश्वविद्यालय से बीएससी और इसके बाद एलएलबी की शिक्षा ग्रहण की हैं। वे एक लॉ फर्म भी संचालित करती हैं। सौम्या भट्ट के आम आदमी पार्टी परिवार में शामिल होने पर हम उनका हार्दिक स्वागत करते हैं।आम आदमी पार्टी में शामिल होने की वजह बताते हुए सौम्या भट्ट ने कहा कि ने जिस तरह से पूरी दिल्ली में जन कल्याण की योजनाएं अरविंद मुख्यमंत्री सरकार के द्वारा लागू की जा रही हैं, शिक्षा के क्षेत्र में जो अभूतपूर्व क्रांति हुई है, मैं उससे बेहद प्रभावित हूं। आम आदमी पार्टी में शामिल होने पर मैं पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल का धन्यवाद करती हूं। 2011 में आम आदमी पार्टी ने जो आंदोलन शुरू किया था, उसने भारतीय राजनीति को सिर्फ एक दिशा ही नहीं दी बल्कि एक नया दृष्टिकोण दिया है। 2011 में आंदोलन के बाद लोग राजनीति में ईमानदारी, कर्मठता और विकास के प्रति सचेत हुए हैं। आज उसी का परिणाम देश के सामने है। आम आदमी पार्टी राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में दिल्ली और पंजाब में जनता की सेवा कर रही है। मैं विश्वास दिलाती हूं कि पार्टी की उम्मीदों पर प्रदेश की जनता के लिए पूरी श्रद्धा से साथ कार्य करूंगी। मैं सेवा, सहयोग और समर्पण से हमेशा काम करती रहूंगी।मूलरूप से उत्तर प्रदेश के लखनऊ निवासी सौम्या भट्ट की मां स्वर्गीय माया भट्ट अपर शासकीय अधिवक्ता थीं। उन्होंने उत्तर प्रदेश समेत देश के अलग अलग जगहों पर करीब 45 साल अपनी सेवाएं दीं। वो करीब 18 साल तक लखनऊ हाईकोर्ट बेंच में अपर शासकीय अधिवक्ता थीं। सौंभ्या भट्ट कहना है कि अपनी मां के पदचिन्हों पर चलते हुए उन्होंने 7 साल पहले लखनऊ में सामाजिक एवं न्याय तंत्र को मजबूत करने के लिए एक सामाजिक संस्था की स्थापना की। जिसमें गरीब महिलाओं और बच्चों को शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के साथ ही पीड़ित महिलाओं को निःशुल्क न्याय मदद प्रदान की जाती है। साथ ही युवाओं के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करने की दिशा में कार्य किया जाता है।

मलिहाबाद में युवक ने केबल से फांसी लगाकर की आत्म हत्या

मलिहाबाद,लखनऊ। मलिहाबाद थाना क्षेत्र में एक युवक ने बंद कमरे में पंखे के कुंडे में केबल डालकर फांसी लगा ली जिससे उसकी मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज आगे की कार्यवाही सुरु कर दी है।मलिहाबाद के ईशापुर गांव का रहने वाला युवक अनीस उर्फ अंकुर पुत्र सियाराम 26 वर्ष गुरुवार को अपनी पत्नी सविता वा तीन साल की बेटी आरोही, गुड़िया चार माह को लेने अपनी ससुराल थाना क्षेत्र के ही हसनापुर गया था। पत्नी बच्चे उसके साथ नहीं आए तो वह अपने घर वापस लौट आया था। अनीस उर्फ अंकुर के गांव में दो घर हैं। अंकुर अपने चार भाइयों में सबसे छोटा था जो मेहनत मजदूरी करता था। ग्रामीणों ने बताया कि रात दस बजे उसकी मां जब खाना लेकर पहुंची तो अंदर से दरवाजा बंद था। आवाज लगाई काफी देर तक कोई नहीं बोला तो उसने पास पड़ोस के लोगों को बुलाया। किसी तरह घर के अंदर पहुंचकर जाकर देखा तो अनीश उर्फ अंकुर कमरे के कुंडे में केबिल के सहारे फांसी के फंदे पर झूल रहा था।

दंड व दुलार दोनों से बच्चों का भविष्य सुधरता है

प्रयाग दर्पण संवाददाता

सरोजनी नगर, लखनऊ। सर्वजन हिताय संरक्षण समिति बेसिक शिक्षा प्रकोष्ठ के तत्वावधान में इस वर्ष रिटायर हुए सभी शिक्षकों का विदाई व सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान लगभग पचास रिटायर्ड शिक्षक तथा आठ विशिष्ट वरिष्ठ शिक्षकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सरोजनी नगर के विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने की जबकि मुख्य अतिथि के तौर पर कौशल किशोर केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री भी शामिल हुए।

समाज का दर्पण शिक्षक विषय पर सेवक राम कन्नौजिया तथा उषा त्रिपाठी वरिष्ठ शिक्षक ने अपना मत रखा और कहा कि शिक्षक चाहे तो बेसिक में मिलने वाले बच्चे के दिमाग में अच्छे संस्कार और अनुशासन डालकर उसे योग्य नागरिक बना सकते हैं। उमेश द्विवेदी ने कहा कि शिक्षक यदि कच्चे घड़े रूपी बालक

को इमानदारी से सही दिशा में ले जाए तो निश्चित रूप से आने वाला समाज और हमारा भारत शिक्षा में अग्रणी देश बन जाएगा। कौशल किशोर ने बचपन की याद दिलाते हुए कहा कि पहले बच्चों को घड़े की तरह बनाया जाता था बाहर से दबाव और अंदर से कोमल हाथ रखते हुए कभी–कभी शिक्षक अपने विद्यार्थियों को दंड भी देता था और शायद उसी दंड का नतीजा था कि पहले की मार हमें आज तक याद है और यदि बच्चों के भविष्य निर्माण को शिक्षकों को कुछ सजा, प्यार और दुलार देना पड़ तो सब से बच्चे का भविष्य सुधरता है। डॉ. राजेश्वर ने शिक्षकों को सामाजिक परिवर्तन की नींव बताया। समिति की तरफ से रीना त्रिपाठी ने उपस्थित सभी शिक्षकों का धन्यवाद किया।

प्रेमी को जेल जाने के सदमे में प्रेमिका ने छोड़ा खाना, भर्ती

रायबरेली। प्रेमी के जेल जाने के सदमे में प्रेमिका ने खाना पीना छोड़ दिया। जिससे प्रेमिका की हालत बिगड़ गई। उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। मामला शहर में स्थित 181 वन स्टॉफ सेंटर का है जहां गुरबक्श गंज थाना क्षेत्र की रहने वाली एक किशोरी जो अपने प्रेमी के साथ कहीं भाग गई थी जिसके बाद परिजनों की तहरीर पर पुलिस ने 9 महीने के बाद प्रेमी प्रेमिका दोनों को कड़ी मशक्कत के बाद पकड़ कर पूछताछ के लिए थाने ले गई थी। बयान के लिए किशोरी को 181 वन स्टॉप सेंटर में रखा गया था। वहीं किसी द्वारा प्रेमिका को बताया गया कि लड़के को जेल भेजा जाएगा। उसके बाद से प्रेमिका सदमे में आ गई और उसने खाना पीना छोड़ दिया।

जिससे उसकी हालत बिगड़ने लगी है बीती रात खाना छोड़ने के कारण वो अचानक बेहोश हो गई। जिससे वन स्टॉप सेंटर में हड़कंप मच गया वहीं सूचना पर महिला थाना अध्यक्ष रेखा सिंह ने अपनी सरकारी गाड़ी में किशोरी से लेकर जिला अस्पताल पहुंची। जहां पर किशोरी गंभीर हालत में भर्ती कराया गया है। पूरे मामले की उच्च अधिकारी जांच कर रहे हैं।

पीड़ित ने एसएसपी से लगाई न्याय की गुहार

अयोध्या। जनपद में भू माफिया दबंग की मनमानी सर चढ़कर बोल रही है जहां पर यह दबंग भूमाफिया अपनी मनमानी करते हुए भूमिधरी की जमीन पर कब्जा करते हुए नजर आ रहे हैं ताजा मामला ग्राम बभनियावां परगना मंगलसी से थाना रौनाही तहसील सोहावल का है जहां पीड़ित आत्म प्रकाश सिंह व विपक्षी अजमत अली पुत्र बच्चू का है पीड़ित ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक से शिकायत की है कि अजमत अली एक जेहादी , दंगाई एंव बमबाज है जिसके विरुद्ध रौनाही साहित विभिन्न थानो मे एफआईआर भी पंजीकृत है। पीड़ित ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को अवगत कराया है कि षड्यंत्र कारी अजमत अली अपने वर्ग विशेष के लोगों के फर्जी हस्ताक्षरो द्वारा पीड़ित व उसके परिवार वालो को साजिशन फर्जी मुकदमो मे फसाने की नियत से कूटरचित प्रार्थना पत्र आए दिन देता रहता है जिसकी पुष्टि 04 अप्रैल 2023 को मौके पर जांच मे आए थाना प्रभारी सन्तोष सिंह व नायब तहसीलदार सोहावल स्नेहिल वर्मा एवं ग्राम वासियो के समक्ष हो चुकी है यह कि फर्जी हस्ताक्षरों से ही कूट रचित कागजात पानी की तरह पैसा बहाकर हासिल करने व राजस्व एंव पुलिस को हमराह बनाने मे लगा है अजमत अली की कार्यशैली से स्पष्ट है कि यह किसी आतंकी , जेहादी गुट का सदस्य है जो क्षेत्र में किसी बड़ी घटना की सम्भावना को प्रदर्शित करता है। पीड़ित ने बताया कि फर्जी हस्ताक्षरों द्वारा पीड़ित व उसके परिवार को फसाने व कूटरचित कागजात तैयार करने तथा क्षेत्र आशान्ती फैलाने एंव पीड़ित की पैतृक जमीन को हथियाने के साजिसकर्ता षडयंत्रकारी बमबाज जेहादी दंगाई अजमत अली पुत्र बच्चू निवासी उपरोक्त के विरुद्ध एफआईआर पंजीकृत कराकर कठोर व वैधानिक कार्यवाही करने की मांग की है।

अब सरकारी अस्पतालों में दवाओं का संकट नहीं: डिप्टी सीएम

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। प्रदेश सरकार प्रत्येक जिले में मेडिकल कॉलेज खोल रही है। स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर स्तर से कार्य कर रही है। स्वास्थ्य सेवाओं को डिजिटल तकनीक से जोड़ा जा रहा है। इससे कम समय में अधिक मरीजों को इलाज मिल रहा है। दस्तक अभियान ने भी रफ्तार पकड़ी है। यह बातें शुक्रवार को विश्व स्वास्थ्य दिवस पर उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कही। उन्होंने कहा कि उप्र में दस्तक अभियान को सफल बनाने के लिए ऑल इंडिया कम्युनिटी हेल्थ वर्कर एसोसिएशन भी सहयोग करेगा। वहीं एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक से उनके आवास पर भेंट की। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने ऑल इंडिया कम्युनिटी हेल्थ वर्कर एसोसिएशन के रचनात्मक प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार प्रत्येक जिले में मेडिकल कॉलेज खोल रही है। इससे डॉक्टरों की कमी पूरी होगी। अब अस्पतालों में

दवाओं का संकट नहीं है। हर जिले में मुफ्त डायलिसिस की सुविधा मुहैया कराई जा रही है। सीटी स्कैन की सुविधा का लगातार विस्तार हो रहा है। सुपर स्पेशिलिटी सेवाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है। एसोसिएशन के राष्ट्रीय महासचिव मनोज कुमार ने कहा कि ब्रजेश पाठक लगातार स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। आभा ऐप से मरीजों का पंजीकरण व टोकन देने की व्यवस्था कारगर साबित हो रही है। मरीजों का कम्प्यूटर से पर्चा बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया जैसी मच्छरजनित बीमारियों की रोकथाम के लिए दस्तक अभियान चलाया जा रहा है। इसे रफ्तार देने में एसोसिएशन सहयोग करेगा। एसोसिएशन की ओर से संकल्प पत्र भी सौंपा गया। कार्यालय सचिव देवेंद्र कुमार ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाओं पर अभी तक ध्यान देने वाला कोई नहीं था।

सीएचसी से आई टीम ने मरीजों का किया परीक्षण

लालगंज, रायबरेली। भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा के द्वारा आयोजित कैंप में लालगंज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से आई डॉक्टरों की टीम ने मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया । कैम्प महेश नगर के सभासद के आवास परिसर में लगाया गया। डॉक्टर गोपी चौरसिया ने मरीजों का वजन नापा, ब्लड प्रेशर की जांच की। साथ ही मर्ज के अनुसार मरीजों को दवा भी निशुल्क वितरित किया ।इसके अलावा सभी मरीजों को मास्क, इलेक्ट्रॉल और कैल्शियम की दवा भी वितरित की गई। डॉक्टर गोपी चौरसिया ने कैंप में मरीजों को मच्छर जनित रोगों से बचने के बाबत भी जागरूक किया और कहा कि अपने आसपास कहीं भी जलभराव ना होने दें ।साथ ही कूड़ा करकट इधर–उधर ना फेंके जिससे कि बीमारियों को रोकने में निजात मिल सके ।

ट्रक ने बाइक सवार चाची व भतीजे को रौंदा, मौके पर दोनों की मौत

रेउसा (सीतापुर)। रेउसा थाना क्षेत्र मे गुरुवार की शाम को तेज रफ्तार से आ रहे ट्रक ने मोटरसाइकिल सवार भतीजा व चाची को रौद दिया। जिससे मौके पर दोनों की मौत हो गयी। भरथा गांव निवासी मृदुल मौर्य उर्फ अमन (22) पुत्र स्वर्गीय करुणानिधान मौर्य चाची आरती देवी मौर्य (35) पत्नी आलोक मौर्य शाम को यूपी 34एएल 1327 मोटरसाइकिल पर सवार होकर रेउसा कस्बा दवा लेने के लिए आई हुई थी। दवा लेकर वापस लौट रहे। रेउसा बहराइच मार्ग पर शिवपुरी गाँव के पास लेकर निकल रहा था। बहराइच की ओर से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक यूपी 78सीटी 3132 मोटरसाइकिल सवार भतीजा व चाची को रौंद दिया। मुगलनपुरवा गांव के पास मौके पर ही मौत हो गई। ट्रक सड़क किनारे उतर गया ट्रक चालक ट्रक छोड़कर मौके से फरार हो गया। मौके पर मौजूद ग्रामीणों द्वारा घटना की जानकारी पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने 108 एंबुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रेउसा पहुंचाया। यहां पर चिकित्सक डॉक्टर सुनील यादव डॉक्टर नरेश चौधरी दोनों को मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी पाकर मौके पर पहुंचे परिजनों का रो रोकर बुरा हाल एक साथ दो दो मोटे होना परिवार के लिए हृदय घातक घटना घटित हो गई। घटना की जानकारी सुनकर हर कोई गांव का ग्रामीण व परिवार के लोग अस्पताल में पहुंच रहे। थानाध्यक्ष संतोष कुमार मय फोर्स के साथ मौके पर पहुंचकर ट्रक को कब्जे में ले लिया। रेउसा–बहराइच मार्ग पर पांच वर्ष पूर्व मृतक मृदुल मौर्य के पिता करुणानिधान मौर्य की मारुबेहड़ पुल के निकट अज्ञात वाहन से मोटरसाइकिल में टक्कर मारकर मौत हो गई थी। अकेला परिवार का चिराग मृदुल भी आज शाम को ट्रक के नीचे दबकर मौत हो गई परिवार में मां व छोटी बहन बची हुई है।

मामूली विवाद में युवक की हत्या करके शव को नदी में फेंका

हरदोई। जिले की पुलिस ने एक महीने पहले नदी में हत्या करके फेंके गए 25 साल के युवक के मर्डर की घटना का खुलासा किया है। पुलिस ने इस मामले में 3 लोगों को गिरफ्तार किया है जिन्होंने शराब पीने के दौरान आपसी कहासुनी में कहासुनी और मारपीट के बाद रस्सी से गला कसकर हत्या कर दी। हत्या करने के बाद आरोपियों ने मृतक की जेब से पैसे और मोबाइल निकाल कर उसके शव को नदी में फेंक दिया था। परिवार वालों की तहरीर पर अज्ञात हत्यारों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था इस बीच हत्यारों में से एक ने मृतक के लुटे हुए मोबाइल में अपना सिम डाल कर चलाने लगा। उसी मोबाइल के जरिए पुलिस हत्यारे तक पहुंच गई और मर्डर की वारदात से पर्दा उठा दिया पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने पत्रकार वार्ता में बताया कि हरदोई की पाली थाना , एसओजी और सर्विलांस टीम के पहले में खड़े बालस्टर , सर्वेश और रामवीर पचदेवरा थाने के पिपरिया गांव के रहने वाले हैं। पुलिस ने इनको पाली थाने के 25 साल के युवक सुमित की हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया है। दरअसल 1 मार्च को सुमित अपने घर से निकला था लेकिन उसके बाद वह घर वापस नहीं लौटा। 7 मार्च को पचदेवरा थाना इलाके में उमरिया कला गांव के पास उसका शव गर्रा नदी में उतराता हुआ मिला। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा जहां पोस्टमार्टम में उसकी हत्या की पुष्टि हुई। जिसके बाद परिवार वालों ने अज्ञात हत्यारों के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कराया। पुलिस के मुताबिक, घटना के बाद से सुमित का मोबाइल और साइकिल गायब थी। हत्या के खुलासे के लिए पुलिस की टीमें लगाई गई थी। सर्विलांस के जरिए पुलिस को जानकारी हुई कि मृतक सुमित का मोबाइल फोन का प्रयोग बालस्टर नामक व्यक्ति द्वारा किया जा रहा है। जिसके बाद पुलिस ने सुमित के मोबाइल का प्रयोग कर रहे आरोपी की तलाश की और उसे हिरासत में लिया। हिरासत में लेने के बाद जब पुलिस ने उससे कड़ाई से पूछताछ की तो उसने बताया कि 1 मार्च की शाम को पिपरिया गांव में देसी शराब के ठेके पर वह और उसका दोस्त सर्वेश शराब पी रहा था। शराब पीने के दौरान सुमित भी ठेके पर पहुंच गया यहां शराब पीने के दौरान दोनों की उससे कहासुनी और मारपीट हो गई। जिसके बाद वह सुमित की साइकिल लेकर अपने गांव के रामवीर के यहां आ गया था।

संक्षिप्त खबरे

पुलिया में फंसा मिला काश्तकार का शव

हरदोई। गोवंशो से खेत की रखवाली करने के लिए घर से गए काश्तकार का शव एक पुलिया में फंसा हुआ देखा गया। बेनीगंज की ईदगाह के पास की पुलिया में इस तरह शव मिलने से सनसनी फैल गई। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेते हुए हर पहलू से मामले की जांच शुरू कर दी है।

बताया गया है कि शुक्रवार की सुबह बेनीगंज की ईदगाह की पुलिया में एक 40 वर्षीय युवक का शव फंसा हुआ देखा गया। उधर शौच के लिए गए कुछ लोगों को इस तरह शव दिखाई देने से वहां हड़कंप मच गया। इसका पता होते ही वहां पहुंची पुलिस ने शव को बरामद कर छानबीन शुरू कर दी। उसके बाद शव की पहचान रामकुमार पुत्र रामविलास निवासी अहिरन पासी टोला के रूप मे हुई। उसकी पत्नी सोनाश्री ने बताया कि उसका पति गुरुवार को देर शाम खाना खाने के बाद गोवंशो से फसल की रखवाली करने के लिए खेत पर गया हुआ था। थे। गोवंशो से फसल को बचाने के लिए वह घर नहीं रुकता था। शुक्रवार सुबह जब उसे इस बात का पता चला तो उसके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। रामकुमार खेती–किसानी करता था।

संदिग्ध परिस्थिति में लगी आग में कई बीघा गेहूं जलकर हुआ राख

बावन,लोनार । थाना क्षेत्र के ग्राम विश्कुला में संदिग्ध परिस्थिति में लगी आग में लगभग 100 बीघा गेहूं जलकर राख हो गया। किसानों की सूझबूझ से गेंहू में लगी आग की चौन को ट्रैक्टर से जोतकर कर तोड़ा गया। व फायर ब्रिगेड की गाड़ी पहुंचकर जिससे आग पर काबू पाया गया। घटना की सूचना पर मौके से स्थानीय पुलिस पहुंच गई और जांच – पड़ताल में जुट गई ।प्राप्त जानकारी अनुसार,ग्राम विशकुला में अचानक गेहूं की खड़ी फसल धू–धू कर जलने लगी। आग इतनी विकराल रूप ले चुकी थी ।उस दौरान किसानों ने अपनी सूझबूझ से आग पर काबू पाया। बताया जा रहा हैं किसनों ने अपने ट्रैक्टर से गेहूं की जुताई करके आग के चौन को तोड़ दिया और जिस से आग पर काबू पाया गया। जब तक आग पर काबू पाया गया तब तक परमेश्वर दिन, सैलेंद्र दीक्षित, अमलेंद्र पाल,सुखदेव, राधिका देवी, रमेश की गेहू फसल जलकर राख हो चुकी थी। वहीं लोगों ने कहा कि गेहूं जलने से अब खाने के लाले पड़ जाएंगे ।हालांकि इस घटना की सूचना पर बावन चौकी पुलिस मौके पर पहुंच गई। आग की घटना को लेकर ग्रामीणों ने अंदेशा जताया की किसी ने जानबूझ कर सिगरेट पीकर गेहूं में फेंका दिया है। फिलाहल पुलिस मामले की छानबीन में जुटी है।

पेड़ से गिरा नवयुवक गंभीर रूप से घायल

मिल्कीपुर – अयोध्या। थाना इनायतनगर के चौकी क्षेत्र बारुन बाजार अंतर्गत खिहारन गांव में पेड़ पर चढ़ा एक नवयुवक गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया ।प्रत्यक्षदर्शी मनीराम मौर्य,अमित मौर्य आदि ने बताया कि मोहम्मद सादिक (18) पुत्र मोहम्मद फिरदौस निवासी मेहदौना भारी थाना इनायतनगर उनके घर के सामने गूलर के पेड़ पर चढ़कर बकरी के लिए पत्ती तोड़ रहा था तभी संतुलन बिगड़ने के कारण वह लगभग 40 फीट की ऊंचाई से नीचे गिर गया जिसमें उसे गंभीर चोट आई ।उसे कई फ्रैक्चर भी हुआ है ।प्रत्यक्षदर्शियों की सूचना पर पहुंची 108 एंबुलेंस ने घायल नवयुवक को ईलाज हेतु जिला चिकित्सालय में ले जाकर भर्ती कराया है।

फंदे से लटका मिला युवक का शव

अयोध्या। जनपद के महाराजगंज थाना क्षेत्र के ईशा सराय गांव में शुक्रवार सुबह एक युवक का शव संदिग्ध परिस्थितियों में फंदे से लटकता पाया गया। पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। ईशा सराय गांव निवासी 35 वर्षीय मनोज कुमार पुत्र मोतीराम का शव शुक्रवार सुबह करीब 5:30 बजे अपने घर के बरामदे में रस्सी के सहारे फांसी के फंदे पर लटकता पाया गया। परिजनों ने इसकी सूचना पुलिस को दिया। पुलिस से शव को नीचे उतारकर पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। थानाध्यक्ष महाराजगंज अनुपम मिश्रा ने बताया कि घटना के कारणों का पता लगाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि परिवार ने किसी भी तरह के पारिवारिक विवाद से इंकार किया है।

कारखाने से अल्टीनेटर चोरी

मानपुर (सीतापुर)। इलाके में बीती रात कारखाने से अल्टीनेटर चोर खोल ले गये। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर मौका मुआयना किया है। चोरी के खुलासे का आश्वासन दिया है। मानपुर थाने से कुछ ही दूरी पर कटरा चौराहे के करीब हथिया, बघइया रोड के पूरब गेंहू पिसाई, सरसों पेराई व धान कुटाई का कारखाना लगा है। कारखाना मालकिन नसीरपुर निवासी आशादेवी पत्नी स्व0 दयाशंकर मिश्रा ने बताया गुरुवार रात किसी पहर चोर कारखाने में लगा अल्टीनेटर खोल ले गये। सुबह जानकारी होने पर पुलिस को सूचना दे दी है। थाना प्रभारी अरविंद कुमार कटियार ने बताया कि पुलिस घटना की जांच कर रही है। शीघ्र ही चोरी का खुलासा किया जाएगा।

सुरक्षा की दृष्टि से प्रशासन ने बंद करवाये होटल व ढाबे

सिधौली (सीतापुर)। प्रमुख सचिव का काफिला गुजरने के चलते सिधौली में सुरक्षा की द्रष्टि से प्रशासन ने अति व्यस्ततम होटल व ढाबे हाइवे को खाली कराकर बंद कराया। शुकवार को प्रमुख सचिव दुर्गा प्रसाद मिश्र सिधौली होते हुए गुजरने वाले थे। वह जनपद में विकास कार्यो कीसमीक्षा और मिश्रिख होते हुए नैमिषारण्य के बाद शाम तक लखनऊ वापास होना था।

जिले में पूरा दिन प्रमुख सचिव की निर्धारित कार्यक्रम के चलते प्रशासन हाई एलर्ट रहा। बिभिन्न चौराहों महमूदाबाद चौराहा बिसवां चौराहा, तहसील तिराहा, डाक बंगला तिराहा आदि पर यातायात व्यवस्था चौकस रखने के लिए पुलिस कर्मी तैनात किए गये। इतना ही नहीं कस्बा के बिसवां चौराहा व बस स्टॉप स्थित अति वयस्त होटल व ढाबों को भी बंद करवा दिया गया। जिससे हाइवे पर अधिक वाहन न खड़े हो और जाम जैसी स्थिति न उत्पन्न हो। वहीं नगर पंचायत प्रशासन द्वारा हाईवे पर टहलने वाले छुट्टा गोवंशों को पकड़वाने का कार्य किया।

बसपा छोड़कर सपा में शामिल लोगों का स्वागत करते जिलाध्यक्ष पारसनाथ यादव

प्रयाग दर्पण संवाददाता

अयोध्या। समाजवादी पार्टी की नीतियों पर भरोसा दिखाते हुए बहुजन समाज पार्टी के तमाम कार्यकर्ताओं ने आज पार्टी का दामन थाम लिया। पार्टी के नवनियुक्त जिला अध्यक्ष पारसनाथ यादव व पूर्व मंत्री तेज नारायण पांडे पवन द्वारा समाजवादी पार्टी में शामिल हो रहे लोगों को पार्टी का झंडा देकर स्वागत किया गया।इस मौके पर जिला अध्यक्ष पारसनाथ यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी में आज शामिल हो रहे लोगों के सम्मान पर कोई भी आंच नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी में ही भारतीय जनता पार्टी को मुंहतोड़ जवाब देने की ताकत है ।पूर्व मंत्री से तेज नारायण पांडे पवन ने पार्टी में शामिल हो रहे लोगों का स्वागत करते हुए कहा कि यह काफिला लगातार बढ़ता रहेगा और आने वाले लोकसभा और निकाय चुनाव में समाजवादी पार्टी अपनी महत्वपूर्ण

भूमिका अदा करेगी उन्होंने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की नीतियों पर प्रदेश की जनता को विश्वास है ऐसे में बड़ी तादाद में लोग समाजवादी पार्टी की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहे हैं । पूर्व विधायक जय शंकर पांडे ने इस मौके पर कहा कि समाजवादी पार्टी ही वह दल है जो सभी जाति और धर्म का सम्मान करते हुए प्रदेश को ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए कटिबद्ध है निवर्तमान जिला महासचिव बख्तियार खान ने कहा कि रुदौली के लोगों ने आज जो समाजवादी पार्टी से सदस्यता ली।

ट्रेन से कटकर रेलवे की-मैन की मौत

अयोध्या। महराजगंज थाना क्षेत्र के बिल्हरघाट रेलवे स्टेशन के निकट ट्रेन से कट कर उत्तर रेलवे के एक की मैन की मौत हो गई। मृतक के नाम और पद की शिनाख्त उसके पास मिले आईकार्ड से हुई है। हादसा गुरुवार रात 12 बजे के आसपास का बताया जा रहा। पुलिस के साथ जीआरपी घटना के बारे में जानकारी जुटाने में लगी हुई है। महराजगंज थाना प्रभारी अनुपम मिश्र की ओर से जारी सूचना के अनुसार रात्रि लगभग 12 बजे स्टेशन मास्टर बिल्हरघाट ने सूचना दी कि एक व्यक्ति ट्रेन की चपेट में आ गया है। उसका का शव पोल नंबर 944ध13 के पास ट्रैक की बीच पड़ा है। इस जानकारी पर थाना की पुलिस, जीआरपी और आरपीएफ मौके पर पहुंची। शव के पास उसका आईडी कार्ड मिला। जिसके अनुसार मृतक का नाम सुरेश मौर्य पुत्र मायाराम मौर्य निवासी रुदौलिया पोस्ट बाकरगंज ,थाना महराजगंज है। बताया कि मृतक उत्तर रेलवे में की मैन था। उसके घर वालों को सूचना दी गई है।

आग लगने से जलकर राख हुई फसल

मिल्कीपुर–अयोध्या। मिल्कीपुर तहसील के अकमा गांव में दोपहर बाद श्यामलाल के गेहूं के खेत में लगी आग से देखते ही देखते 50 बीघा फसल जलकर राख हो गई । गांव के दक्षिण तरफ अचानक श्यामलाल के गेहूं की फसल से धुआं उठने लगा ।तेज पछुवा हवा चलने से उंची उंची लपटे उठने लगी। देखते ही देखते आग इतनी विकराल रूप धारण कर ली कि उसकी चपेट में आने से 21 किसानो के 50 बीघा गेंहूं जल गया । सूचना पर पहुंचे फायर कर्मियों ने किसी तरह आग पर काबू पाया । आग लगने का कारण स्पष्ट नहीं हो सका है । एसडीएम मिल्कीपुर अमित जायसवाल ने बताया कि मौके पर हल्का लेखपाल ब्रिजेन्द्र मिश्रा को भेजा गया है । नुकसान का आकलन कर रिपोर्ट भेजने के लिए कहा गया है । वहीं दूसरी ओर तहसील क्षेत्र के ग्रामसभा अलीपुर खजुरी में शुक्रवार दोपहर करीब12:30 बजे अज्ञात कारणों से गेहूं के खेत में भीषण आग लग गई। पछुआ हवा के चलते आग ने आक्रामक रुख अपना लिया और देखते देखते किसानों की गाढी कमाई से तैयार की गई गेहूं की फसल जलकर राख हो गई ।सूचना पर पहुंचे थाना इनायत नगर पुलिस साकेत कुमार एवं सत्य प्रकाश तथा फायर सर्विस के प्रभारी रितेश शुक्ला अपने पुलिस फायर टीम के फायरमैन संदीप भट्ट ,सत्यम सक्सेना ,विकास यादव, मनमोहन सिंह, एवं संदीप कुमार के साथ एवं ग्रामीणों की मदद से आग पर काबू पाया गया। आग बुझाने में ग्राम प्रधान सेवरा रविंदर यादव, ग्राम प्रधान अलीपुर खजूरी मोहम्मद समीम तथा सैकड़ों ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत की ।सबसे बड़ी मशक्कत सत्यम तिवारी उर्फ रामजी ने की जो जलते हुए आग की परवाह न करके ट्रैक्टर में रोटावेटर बांधकर जोताई शुरू कर दी जिससे आगे आग नहीं बढ़ सकी। सत्यम तिवारी की बहादुरी के चलते कई लोगों के फसलें जलने से बच गई ।

मोनरिबा किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए हमेशा तैयार: प्रो. सिंह

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। नाबार्ड द्वारा प्रवर्तित पूरे फोजशाह किसान उत्पादक कम्पनी के बोर्ड द्वास और सीईओ की प्रशिक्षण के लिए अप्रैल 5–7 तक तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित उत्पादक किया गया। इन तीन दिवसीय कार्यक्रम के माध्यम से पुरेफोजशाह किसान उत्पादक कंपनी के नए बोर्ड और सीईओ को उनके कार्य के लिए अधि ाक तकनीकी प्रशिक्षाण दिया गया।मोतीलाल नेहरू अनुसंधान और व्यवसाय प्रशासन संस्थान में आयोजित हुए इस कार्यक्रम का उद्घाटन प्रोफेसर आर. एस. सिंह (निदेशक, मोनिरबा) द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में अनिल कुमार शर्मा (डीडीएम, नाबार्ड), डॉ. ए. सी. पांडेय (प्रोफेसर, मोलिरबा), श्रीमति कामिनी सिंह (निदेशक, कामिनी फाउंडेशन) एंव पुरेफौजशाह किसान उत्पादक कंपनी के सभी बी. ओ. डी. और सी. ई. ओ. भी उपस्थित रहे।

प्रो. आर. एस. सिंह ने दीप प्रज्जवलित करके सत्र का आरम्भ किया एवं सभी प्रशिक्षुओं को शुभकामनाएं दी तथा कंपनी के तरक्की के लिए सबको प्रोत्साहित किया। उन्होने बताया कि मोबिरबा हमेशा किसानो को प्रबंधन में सक्षम करने के लिए तैयार है, और उन्हें खुशी हो रही है कि कॉलेज में सिर्फ बच्चे ही नहीं, बल्कि अन्नदाता भी प्रशिक्षण ले रहे हैं।डॉ. ए. सी. पांडेय ने अपनी खुशी जाहिर की कि सरकार की ऐसी योजनाओं के कारण गाँवों की विकास होगा और उसमे प्रशिक्षुओं को अहम् भूमिका निभानी होगी। अनिल कुमार ने बताया की नाबार्ड हमेशा ग्रामीण विकास के लिए तत्पर रही है और ऐसे किसान उत्पादक कम्पनियों के द्वारा नाबार्ड हट एक छोटे किसान को भी अपने उत्पाद का सही, मूल्य दिलाने की तरफ काम कर रही है। उन्होंने प्रशिक्षुओं से आग्रह किया की इस प्रशिक्षण से सीखें और कम्पनी को सफल बनायें।तीन दिन तक चलने वाली इस प्रशिक्षण में प्रबंधन और कंपनी से संबन्धित विषयों के विशेषज्ञों ने बीओडी और सीईओ को प्रशिक्षित किए किया एवं उनके समस्याओं का समाधान भी किया।अन्तिम सत्र में चार्टर्ड एकाउंटेंट की अमित केशरवानी ने किसान उत्पादक कंपनी के नियमों के विषय में बताया। अन्त में श्रीमति कामिनी सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

एसआरएन हॉस्पिटल में जूनियर डॉक्टर और तीमारदारों में मारपीट

प्रयागराज। स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल में गुरुवार देर रात तीमारदार और जूनियर डॉक्टरों में मारपीट हो गई। तीमारदार ने जूनियर डॉक्टर को पीट दिया तो आक्रोशित डॉक्टरों ने मिलकर तीमारदार को भी पीटा।

अस्पताल के सभी जूनियर डॉक्टर देर रात कार्य बहिष्कार करते हुए स्ट्राइक पर चले गए।डॉक्टर एसआरएन पुलिस चौकी के पास धरने पर बैठ गए। बवाल बढ़ता देख पुलिस फोर्स तैनात कर दी गई। जूनियर डॉक्टरों का आरोप है कि तीमारदार ने तमंचे के बट से हमला किया है। उसके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। रात में मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के उप प्राचार्य डॉ. वीके पांडेय समेत पुलिस विभाग के उच्चाधिकारी भी मौके पर पहुंच गए। शुक्रवार को भी जूनियर डॉक्टर हड़ताल पर रहे। इससे पूरे दिन ज्यादातर ओपीडी नहीं चल सकी।बताया जाता है कि 70 वर्षीय मरीज प्रतापगढ़ जनपद का रहने वाला था। उसे कुछ दिक्कत हुई तो परिवार वाले 26 मार्च को लेकर एसआरएन अस्पताल चले आए। यहां मरीज को भर्ती किया गया था। उसे डिस्चार्ज किया जाना था। ड्रेसिंग करने को लेकर ड्यूटी में रहे जूनियर डॉक्टरों और तीमारदार के बीच विवाद हो गया।

तैयारियां पूरी: कुर्मी महासभा का दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन 8 से

प्रयाग दर्पण संवाददाता

बस्ती । भारतीय कुर्मी महासभा का दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन एवं सम्मेलन शनिवार 8 अप्रैल से सरदार पटेल स्मारक संस्थान ' कुर्मी बोर्डिंग' में आयोजित किया गया है। अधिवेशन एवं सम्मेलन की तैयारी पूरी की जा चुकी है। जिलाध्यक्ष डा. वी.के. वर्मा ने बताया कि पहले दिन अधिवेशन में देश के विभिन्न राज्यों से लगभग 200 प्रतिनिधि हिस्सा लेंगे और राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक मोर्चो पर व्यापक विमर्श कर निर्णय लिये जायेंगे। प्रदेश अध्यक्ष डा. हरिश्चन्द्र पटेल ने बताया कि 9 अप्रैल को सम्मेलन में तीन हजार सदस्यों की उपस्थिति में प्रस्ताव पारित किये जायेंगे। इसके साथ ही विशेष योगदान के लिये चयनित लोगों को सम्मानित किया जायेगा।डा. वी.के. वर्मा ने बैठक में बताया कि राष्ट्रीय अधिवेशन में मुख्य अतिथि के रूप में जीएएस के अध्यक्ष जे.के. थिसिया, विशिष्ट अतिथि के रूप में कैबिनेट मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह, राज्य मंत्री गन्ना

विकास संजय कुमार गंगवार, मंत्री राकेश सचान, समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष संजय चौधरी, अपना दल के कार्यकारी अध्यक्ष आशीष पटेल को आमंत्रित किया गया है। बताया कि कार्यक्रम में डा. आर.के. वर्मा, डा. एच.एन. सिंह, राम मूर्ति वर्मा, राजेन्द्र चौधरी, प्रभात वर्मा, ई. वीरेन्द्र चौधरी, राम प्रताप वर्मा, प्रेमसागर पटेल, जीतलाल पटेल, सुनील कुमार पटेल, कविन्द्र उर्फ अतुल चौधरी, विपिन कुमार वर्मा, डा. सुरभि गंगवार, रामललित चौधरी, पंकज पटेल, अनिल पटेल, राम निवास वर्मा, श्रीमती रमा निरंजन, डा. मान सिंह, अरविन्द चौधरी, दयाराम चौधरी, डा. हरिश्चन्द्र पटेल, बाबा भाई पटेल, राम किशोर पटेल, अरविन्द सिंह बौद्ध, अवध नरेश वर्मा, ई. के.के. चौधरी, डा. आशुतोष वर्मा, आनन्द वर्मा, शरद चौधरी के साथ ही देश प्रदेश के अनेक जन प्रतिनिधि, सांसद, विधायक एवं अनेक संगठनों के पदाधिकारी, कार्यकर्ता हिस्सा लेंगे।बताया कि अधिवेशन में कुर्मी समाज की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति पर विमर्श के साथ ही अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये जायेंगे।

30 साल से बंद रास्ते को खुलवाया

मथुरा। 30 साल से बंद रास्ते को एक बार फिर खुलवा दिया गया है। विकासखंड फरह की ग्राम पंचायत ठाकुर मिर्जापुर में श्मशान घाट से मां छिकारी मंदिर तक के रास्ते को गांव के ही ग्रामीणों ने कब्जा कर रखा था। जिस को मौजूदा ग्राम प्रधान श्याम बाबू चाहर ने लगातार कोशिशों के बाद खाली करा दिया। श्मशान घाट का मंदिर तक के रास्ते को दबंग ग्रामीणों ने 30 साल से कब्जा कर रखा था श्मशान घाट और मंदिर जाने में ग्रामीणों को गंदे रास्तों से निकलकर जाना पड़ता था आने जाने में काफी दिक्कतें होती थी जिसको ग्राम प्रधान की लगातार कोशिशों के बाद खाली करा दिया। वहीं मौके पर राजस्व विभाग की टीम नायब तहसीलदार पटवारी व पुलिस बल की मौजूदगी में प्रधान ने जेसीबी मशीन द्वारा रास्ते को साफ कराया व ग्राम वासियों के हवाले कर दिया राजस्व विभाग में श्याम बाबू चाहर प्रधान लगातार 22 महीने से रास्ता खाली कराने के लिए शिकायत कर रहे थे। लगातार प्रयासों के कारण रास्ते को राजस्व विभाग की टीम ने खाली करा दिया।

डॉक्टरों ने चलाई साइकिल, स्वस्थ रहने का दिया संदेश

प्रयागराज। पूरी दुनिया आज वर्ल्ड हेल्थ डे मना रही है। प्रयागराज में भी डॉक्टरों ने इस विशेष मौके पर आमजन को स्वस्थ रहने का संदेश दिया। इसके लिए शहर के नामचीन डॉक्टरों ने साइकिल चलाई।साइकिल रैली सुबह महाराणा प्रताप चौराहा स्थित इलाहाबाद मेडिकल एसोसिएशन परिसर से रवाना हुई। सभी गिरजाघर चौराहा, सुभाष चौराहा, मेडिकल कॉलेज चौराहा, बैरहना, बालसन चौराहा, मोतीलाल नेहरू इंजीनियरिंग कॉलेज होते हुए सीएमओ आफिस पहुंचे। डॉक्टरों ने आह्वान किया कि स्वस्थ रहना है तो सुबह पैदल चलें या साइकिल चलाएं। इससे विभिन्न बीमारियों से बचा जा सकता है।एएमए के सभागार में स्वास्थ्य जागरूकता संगोष्ठी व सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। यहां उत्कृष्ट कार्य करने वाले स्वास्थ्यकर्मियों व नर्सिंग स्टाफ को जिला पंचायत अध्यक्ष वीके सिंह व सीएमओ द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि रहे जिला पंचायत अध्यक्ष ने कहा, स्वस्थ रहना ही व्यक्ति की सबसे बड़ी पूंजी है। इसके लिए खुद भी जागरूक होने की जरूरत है। सीएमओ डॉ. पांडेय ने कहा, लोगों को स्वस्थ रहने का संदेश देने के लिए साइकिल रैली निकाली गई।एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. सुबोध जैन ने कहा, स्वस्थ रहने के लिए व्यक्ति को कुछ समय खुद के लिए निकालना होगा। नियमित रूप से सुबह उठकर पैदल टहलना या साइकिल चलाना सेहत के लिए फायदेमंद है। मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एसपी सिंह ने स्वस्थ रहने का संदेश दिया। इस मौके पर पूर्व अध्यक्ष डॉ. सुजीत सिंह, सचिव डॉ. आशुतोष गुप्ता, प्लास्टिक सर्जन डॉ. मोहित जैन समेत अन्य डॉक्टर मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरे

थाना पूरामुफ्ती पुलिस द्वारा 01 वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

प्रयागराज। थाना पूरामुफ्ती पुलिस द्वारा अपर सत्र न्यायाधीश,त्वरित न्यायालय कौशाम्बी के एनबीडब्लू मु0अ0सं0 280ध्2019 धारा 302 भादंवि0 ST NO 12/2020 से सम्बन्धित वारण्टी अभियुक्त 1.परदुम पासी उर्फ पदुम पासी पुत्र स्व0 सियम्बर नि0 इस्माइलपुर कोटवा थाना पूरामुफ्ती कमिश्नरेट प्रयागराज को गिरफ्तार किया गया। नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी। गिरफ्तार अभियुक्त– परदुम पासी उर्फ पदुम पासी पुत्र स्व0 सियम्बर नि0 इस्माइलपुर कोटवा थाना पूरामुफ्ती कमि0 प्रयागराज, उम्र 23 वर्ष गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीमः– 1.उ0नि0 कुलदीप शर्मा थाना पूरामुफ्ती कमिश्नेरट प्रयागराज 2.का0 विनोद यादव थाना पूरामुफ्ती कमिश्नरेट प्रयागराज।

थाना सरायइनायत पुलिस द्वारा दुष्कर्म के मुकदमे में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

प्रयागराज। थाना सरायइनायत पुलिस द्वारा मु0अ0सं0 520/2022 धारा 376/506/366 भादंवि0 व 5ध्6 पॉक्सो एक्ट में वांछित अभियुक्त वीरेन्द्र यादव पुत्र लालचन्द्र यादव निवासी ककरा उपरहार तिवारीपुर थाना सरायइनायत जनपद प्रयागराज को शहर रोड़ PNT कॉलोनी म0न0 18 कलेक्टर चाल थाना विले पार्ले ईस्ट जनपद मुम्बई (महाराष्ट्र) से गिरफ्तार किया गया। नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी।गिरफ्तार अभियुक्त–वीरेन्द्र यादव पुत्र लालचन्द्र यादव निवासी ककरा उपरहार तिवारीपुर थाना सरायइनायत जनपद प्रयागराज, उम्र 19 वर्ष सम्बन्धित अभियोग– मु0अ0सं0 520/2022 धारा 376/506/366 भादंवि0 व 5ध्6 पॉक्सो एक्ट गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम–1. उ0नि0 जितेन्द्र प्रताप यादव थाना सरायइनायत कमिश्नरेट प्रयागराज 2. का0 अजीत कुमार थाना सरायइनायत कमिश्चनरेट प्रयागराज।

थाना नवाबगंज पुलिस द्वारा शातिर चोर गिरफ्तार, कब्जे से चोरी के 02 मोबाइल फोन बरामद

प्रयागराज। थाना नवाबगंज पुलिस द्वारा मु0अ0सं0 15/2023 धारा 379 भादंवि0 से सम्बन्धित अभियुक्त सुमित पाण्डेय पुत्र लालजीत पाण्डेय निवासी ग्राम अंधियारी लालगोपालगंज थाना नवाबगंज कमि0 प्रयागराज को आज दिनांक 07.04.2023 को कठौवा पुल के पास लालगोपालगंज से गिरफ्तार कर कब्जे से चोरी के 02 एन्ड्रायड मोबाइल फोन बरामद किये गये। उक्त बरामदगी के आधार पर मुकदमा उपरोक्त में 411 भादंवि0 की बढ़ोत्तरी की गयी। नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी। गिरफ्तार अभियुक्त– सुमित पाण्डेय पुत्र लालजीत पाण्डेय निवासी ग्राम अंधियारी लालगोपालगंज थाना नवाबगंज कमि0 प्रयागराज, उम्र करीब 23 वर्ष पंजीकृत अभियोग–मु0अ0स0 151/2023 धारा 379/411 भादंवि0 थाना नवाबगंज कमि0 प्रयागराज बरामदगी 02 चोरी के एन्ड्रायड मोबाइल फोन आपराधिक इतिहास– मु0अ0सं0 772/2021 धारा 3,25 आर्म्स एक्ट थाना सिविल लाइन्स कमि0 प्रयागराज गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम–1. उ0नि0 सूर्य प्रकाश दूबे चौकी प्रभारी लालगोपालगंज थाना नवाबगंज कमि0 प्रयागराज । 2. का0 आकाश कुमार चौकी लालगोपालगंज थाना नवाबगंज कमि0 प्रयागराज 3. का0 पंकज कुमार चौकी लालगोपालगंज थाना नवाबगंज कमि0 प्रयागराज।

वृंदावन में बंद कमरे में मिला व्यक्ति का शव

मथुरा। वृंदावन के पानीघाट स्थित मोहिनी नगर में एक बंद कमरे में एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति का शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। पूरा मामला वृन्दावन के मोहिनी नगर का है। करीब छह माह पहले एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने मोहिनी नगर में रामजीत पुत्र नत्थी लाल के यहां कमरा किराये पर लिया था। वही मकान मालिक ने बताया कि वह काफी दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। कल से जब उनके कमरे का दरवाजा नहीं खुला, तो उन्होंने डायल 100 के जरिए फोन कर पुलिस को सूचित किया। वही मौके पर इलाका पुलिस पहुंची और पुलिस की मौजूदगी में जब दरवाजा तोड़ा गया, तो वह मृत अवस्था में मिले। पुलिस को कमरे की छानबीन पर एक आधार कार्ड मिला है। जिस पर मृतक का नाम बालचंद्र कुर्मी पुत्र दुरावल निवासी पहाड़पुर खुर्द गाजीपुर अंकित मिला। पुलिस को कमरे से कुछ फोन नंबर भी मिले है। जिनसे पूछताछ कर जानकारी हासिल की जा रही है। वृंदावन कोतवाली की मथुरा गेट चौकी प्रभारी दीपक तिवारी ने बताया कि पड़ोसियों के अनुसार मृतक काफी समय से अस्वस्थ चल रहा था। मौके से मिले मोबाइल नंबरों के आधार पर मृतक के परिजनों से बातचीत की गई है। साथ ही छानबीन कर मृत्यु के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

चोरी के माल-तमंचा समेत दम्पति दबोचे

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अपराधों में अंकुश लगाने को जारी कार्यवाही के क्रम में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी एवं सीओ राजापुर शीतला प्रसाद पाण्डेय की देखरेख में थानाध्यक्ष सरधुवा प्रवीण कुमार सिंह की टीम ने अमावस्या मेले में कामतानाथ प्रमुख द्वार से श्रद्धालु के साथ हुयी टप्पेबाजी की घटना का खुलासा किया है। उन्होंने अभियुक्त व अभियुक्ता को दबोचकर टप्पेबाजी का माल व 21390 रुपये तथा एक लाख कीमत के सोने–चांदी के जेवर व तमंचा–कारतूस बरामद किया है।

ज्ञात है कि तीन अप्रैल को अमावस्या मेला में कामतानाथ प्रमुख द्वार पर बाबूलाल त्रिपाठी पुत्र स्व रामविशाल त्रिपाठी निवासी शिवनगर कालोनी थाना सिविल लाइन सतना मप्र परिजनों के साथ दर्शन करने आये थे। अज्ञात लोगों ने टप्पेबाजी कर उनके रुपये व सोने–चांदी के जेवर चोरी कर लिये थे। सूचना पर थाना नयागांव में मामला दर्ज हुआ था।शुक्रवार को थानाध्यक्ष सरधुवा की टीम ने मुखबिर की सूचना पर गडौली मोड से मुकेश द्विवेदी उर्फ मुक्का पुत्र स्व भोला द्विवेदी निवासी दरसेड़ा व शगुन द्विवेदी पत्नी स्व भोला द्विवेदी निवासी दरसेड़ा को चोरी के 21390 रुपये व एक लाख कीमत के सोने–चांदी के जेवर, एक तमंचा 315 बोर, कारतूस समेत दबोचा है।

सुरंग गैंग का पर्दाफाश: दिन में रेकी, फिर रात में वारदात करते थे राजमिस्त्री

प्रयाग दर्पण संवाददाता

मेरठ। मेरठ में हापुड़ अड्डे के पास न्यू अंबिका ज्वेलर्स की दुकान में सुरंग बनाकर करीब पंद्रह लाख रुपये की चोरी करने वाले गैंग को माल समेत गिरफ्तार किया गया है। बुलंदशहर के रहने वाले बदमाश ब्रह्मपुरी में रहकर राजमिस्त्री का काम करते थे। पुलिस ने बुधवार रात सुरंग में से एक गैस सिलेंडर, डीवीआर, खुरपी और कुछ अन्य सामान भी बरामद किया है। इस गैंग द्वारा अब तक कहां–कहां सुरंगे बनाई हैं, इसकी पड़ताल की जा रही है।

नंदन सिनेमा के सामने पीयूष गर्ग की न्यू अंबिका ज्वेलर्स की दुकान में सुरंग बनाकर 15 लाख रुपये का माल चोरी कर लिया था। इस मामले में बुलंदशहर के रहने वाले तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया है। ये तीनों ब्रह्मपुरी के तारापुरी में मकान किराये पर लेकर लिंटर डालने का काम करते हैं। इन्होंने तीन दिन में सुरंग बनाई है। पुलिस का कहना है कि खुलासा करने में सीसीटीवी फुटेज से काफी मदद मिली है। जेवर में बेचा था माल आरोपी वारदात को अंजाम देने के बाद बुलंदशहर भाग गए थे। बुलंदशहर में सराफ को माल बेचने की कोशिश की। बात नहीं बनने पर जेवर कस्बे में बेच दिया। माल खरीदने वाले सराफ से भी पुलिस पूछताछ करने में जुटी हुई है। प्रिया ज्वेलर्स में दो बार बनाई थी सुरंग नंदन सिनेमा हाल के पास पकड़े गए बदमाशों ने ही मयूर विहार निवासी हेमेंद्र राणा की दुकान प्रिया ज्वेलर्स में दो बार सुरंग बनाई थी। पहली सुरंग 22 अगस्त 2022 और दूसरी बार कुछ दिनों पहले ही सुरंग बनाई थी। पुलिस आरोपियों से पूछताछ करने में जुटी है । तीन दिन तक रेकी, फिर की वारदात आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि आरोपियों ने तीन दिन तक पहले रेकी की। उन्होंने देखा कि यहां 112 की तैनाती तो नहीं है। फैंटम तो राउंड नहीं लेती। जब उन्होंने देखा कि यहां पर गश्त नहीं होती तो फिर उन्होंने वारदात को अंजाम दिया।

प्रॉपर्टी डीलर किडनैपिंग में अतीक और उसके बेटे पर आरोप तय

प्रयागराज, लखनऊ। उमेश पाल अपहरण केस में उम्र कैद की सजा काट रहे माफिया अतीक अहमद पर किडनैपिंग के एक और केस में आरोप तय किए गए हैं। शुक्रवार को लखनऊ की सीबीआई कोर्ट ने प्रॉपर्टी डीलर अपहरण केस में अतीक के अलावा उसके बेटे उमर सहित 12 लोगों पर आरोप तय किए।ज्ञात हो कि अतीक अहमद दिसंबर 2018 में यूपी की देवरिया जेल में बंद था। उस समय लखनऊ के आलमबाग में रहने वाला कारोबारी मोहित जायसवाल उससे मिलने जेल में आया था।

बाद में उसने आरोप लगाया था कि अतीक के गुर्गे उसे जबरन लखनऊ से उठाकर एसयूवी से देवरिया जेल ले गए थे। जेल में अतीक अहमद से मुलाकात कराई गई।

जेल में अतीक के बेटे उमर और गुर्गों ने उसकी पिटाई की और जान से मारने की धमकी दी। साथ ही करोड़ों की जमीन के कागजों पर जबरन साइन करा लिए थे। मोहित से अतीक के गैंग ने रंगदारी भी मांगी थी।

थाना खुल्दाबाद पुलिस द्वारा 02 शातिर चोर गिरफ्तार

प्रयागराज। थाना खुल्दाबाद पुलिस द्वारा मु0अ0सं0 57/23 धारा 380/411 भादंवि0 में वांछित अभियुक्तगण 1.अंकित कुमार पुत्र स्व0 हरिओम नि0 65/76 हिम्मतगंज थाना खुल्दाबाद प्रयागराज 2.सनी खेत्रपाल पुत्र घनश्याम दास खेत्रपाल नि0 2,2ए लूकरगंज थाना खुल्दाबाद प्रयागराज को चौफटका पुल के नीचे से पुल के पीलर की आड से खाली स्थान के पास से गिरफ्तार कर कब्जे से 02 जोड़ी पायल सफेद धातु, 01 कमरबंद सफेद धातु, 01 जोड़ी हाथ मेंहदी सफेद धातु, 01 नथिया पीली धातु, 01 अंगूठी पीली धातु, 01 कमर छल्ला सफेद धातु बरामद किया गया। नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी।गिरफ्तार अभियुक्त–1. अंकित कुमार पुत्र स्व0 हरिओम नि0 65ध्76 हिम्मतगंज थाना खुल्दाबाद प्रयागराज, उम्र करीब 21 वर्ष 2. सनी खेत्रपाल पुत्र घनश्याम दास खेत्रपाल नि0 2,2ए लूकरगंज थाना खुल्दाबाद प्रयागराज, उम्र 24 वर्ष बरामदगी – 02 जोड़ी पायल सफेद धातु, 01 कमरबंद सफेद धातु , 01 जोड़ी हाथ मेंहदी सफेद धातु , 01 नथिया पीली धातु , 01 अंगूठी पीली धातु, 01 कमर छल्ला सफेद धातु पंजीकृत अभियोग– मु0अ0सं0 57/23 धारा 380/411 भादंवि0 थाना खुल्दाबाद कमिश्नरेट प्रयागराज गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम 1.उ0नि0 अभिलाष कुमार थाना खुल्दाबाद कमिश्नरेट प्रयागराज 2.का0 नीरज यादव थाना खुल्दाबाद कमिश्नरेट प्रयागराज 3.का0 अनिल कुमार पटेल थाना खुल्दाबाद कमिश्नरेट प्रयागराज 4.का0 महेन्द्र कुमार थाना खुल्दाबाद कमिश्नरेट प्रयागराज।

अब सरधना बन रहा मिनी सोतीगंज, पुलिस की नाक के नीचे चल रहा बड़ा खेल

मेरठ। मेरठ के सरधना में कालंद रोड पर पुलिस की नाक के नीचे मिनी सोतीगंज खूब धड़ल्ले से चलता मिला। नगर के लोगों द्वारा वाहनों के कटान की शिकायत कई बार एसएसपी से किए जाने के बाद थाना पुलिस ने कार्रवाई की। कार्रवाई के नाम पर भी पुलिस ने बड़ा खेल किया। 24 घंटे तक पुलिस मौके से दर्जनों आरोपियों को हिरासत में लेकर गुडवर्क बताती रही।फिर बाद में तीन आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया। पुलिस ने चार बाइकें व बाइकों के पुर्जे बरामद करने का दावा किया है।नगर के कालंद रोड स्थित बर्फ फैक्टरी के पास बुधवार रात बंद पड़े एक मकान पर पुलिस ने छापा मारा। पुलिस ने कई बाइकें बरामद कीं, जिनमें कुछ बाइकों के पुर्जों के ढेर लगे थे व कुछ बाइकें कटी हुई पड़ी थीं। पुलिस ने मौके से नौ युवकों को भी हिरासत में लिया और पूछताछ की। दिनभर आरोपियों को छुड़ाने के लिए सफेदपोश नेताओं की थाने में भीड़ लगी रही।

इससे पहले मोहल्ला इस्लामाबाद, तकियाकैत व कुलंजन गांव से चोरी की कटी बाइक व लोहे का सामान बरामद किया जा चुका है।

पुलिस की लापरवाही के चलते सरधना क्षेत्र मिनी सोतीगंज बनता जा रहा है। बीते माह गांव कुलंजन से चोरी की बाइकों के कटे हुए पार्ट्स एक मकान से बरामद हुए थे। साथ ही आरोपी को भी मौके से हिरासत में लिया था। लेकिन पुलिस की मेहरबानी से उसे थाने से ही छोड़ दिया गया था।वहीं, देर रात पकड़े गए कई आरोपियों को भी पुलिस ने थाने से ही छोड़ दिया। पुलिस का कहना है कि हिरासत में लिए गए आरोपियों से पूछताछ की गई।पुलिस ने इस मामले में फुरकान पुत्र नसीबुद्दीन निवासी मोहल्ला धर्मपुरा, सलमान पुत्र मेहराजुद्दीन निवासी कालंद चुंगी, आरिफ पुत्र करीम निवासी धर्मपुरा को गिरफ्तार किया है। आरोपियों से चार बाइकें व कटे हुए पुर्जे बरामद किए हैं।

स्वस्थ भारत के मिशन को पूरा कर रही है मोदी और योगी सरकार: गणेश केसरवानी

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। भारतीय जनता पार्टी के द्वारा आयोजित सामाजिक न्याय सप्ताह कार्यक्रम के अंतर्गत आज युवा मोर्चा के तत्वाधान में प्रयागराज महानगर में निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। निशुल्क शिविर का शुभारंभ नगरीय स्वास्थ्य सामुदायिक केंद्र बहादुरगंज में भाजपा महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी ने किया और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र प्रथम एवं द्वितीय दारागंज मे प्रदेश महिला मोर्चा की महामंत्री डॉक्टर कृतिका अग्रवाल ने किया।

इस अवसर पर भाजपा महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी ने कहा कि केंद्र की मोदी एवं प्रदेश की योगी सरकार स्वस्थ भारत के मिशन को पूरा करने में लगातार कार्य कर रही है। इसके लिए देश के अंदर प्रत्येक प्रदेश में एम्स और प्रदेश के प्रत्येक जिला में मेडिकल कॉलेज का निर्माण हो रहा है और कई जिलों में हो चुका है। जिससे आने वाले दिनों में लोगों को सुचारू रूप से स्वास्थ्य की सुविधाएं प्राप्त हो सके।इस अवसर पर डॉ कृतिका अग्रवाल ने कहा कि केंद्र की मोदी और प्रदेश की योगी सरकार ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में गरीबों की स्वास्थ संबंधित सेवा हेतु सराहनीय कदम उठाए हैं।मीडिया प्रभारी राजेश केसरवानी ने बताया कि निशुल्क स्वास्थ्य शिविर के माध्यम से नगर के सभी स्वास्थ्य एवं प्राथमिक सामुदायिक केंद्रों में यह अभियान चलाया गया। जिसमें हजारों लोगों ने निशुल्क बीपी, ब्लड, शुगर, नेत्र की जांच कराई और अन्य बीमारियों के निशुल्क दवा प्राप्त किए। कार्यक्रम के संयोजक भाजपा युवा मोर्चा महानगर अध्यक्ष रोहित पप्पू पांडे रहे।इस अवसर पर राजेश केसरवानी, गिरीजेश मिश्रा, अजय अग्रहरि, भरत निषाद, लव कुश केसरवानी, अमन कुशवाहा, सुभाष वैश्य, आशीष द्विवेदी, केशव शर्मा, सत्यजीत सिंह, आशुतोष पालीवाल चिकित्सा प्रभारी डॉ अनिल ,डॉ प्रीति सिंह आदि मौजूद रहे।

अडानी और प्रधानमंत्री के रिश्तों का खुलासा हो: राजेश तिवारी

प्रयागराज। कांग्रेस के प्रभारी राष्ट्रीय सचिव एवं छत्तीसगढ़ के मंत्री राजेश तिवारी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और उद्योगपति गौतम अडानी के रिश्तों का खुलासा होना चाहिए। आज यहां बलरामपुर हाउस स्थित कांग्रेस नेता हरिकेश त्रिपाठी के आवास पर बौद्धिक संगोष्ठी में बोलते हुए उन्होंने कहा कि राहुल गाँधी की इस मांग से सरकार संसद में चर्चा से कयों भागती है। संसद से उनके भाषण को न केवल 18 जगहों से स्पंज कर दिया गया बल्कि उनकी सदस्यता भी खत्म कर दी। पीएम से जो सवाल करता है उसे देशद्रोही बता दिया जाता है। तिवारी ने अडानी मामले में सुप्रीम कोर्ट के जांच करने के फैसले को राहुल की जीत बताया। यह भी कहा कि हिंडनवर्ग की दूसरी रिपोर्ट में विनोद अडानी पर गंभीर आरोप लगाये गये हैं। कहा कि पार्टी निकाय चुनावों को मजबूती से लड़ेगी। संगोष्ठी का संचालन प्रदेश कांग्रेस के पूर्व प्रवक्ता किशोर वार्ष्णेय ने किया। प्रारंभ में पुरोहितों द्वारा स्वस्थ वाचन कर तिवारी का स्वागत किया गया।

इस अवसर पर जिलाध्यक्ष द्वय सुरेश यादव व अरूण तिवारी, शहर अध्यक्ष प्रदीप मिश्रा अंशुमन, पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष रामयज्ञ द्विवेदी, पूर्व विधायक विजय प्रकाश, उज्वल शुक्ला , महासचिव द्वय मुकुंद तिवारी, विवेकानंद पाठक, सुधाकर तिवारी, संजय तिवारी , देवी पांडेय, आशीष पांडेय , प्रो. ओमप्रकाश मिश्रा, पूर्व जिला जज एस पी मिश्रा, राम किशुन पटेल , मनोज पासी, राकेश पटेल , बृजेश सिंह , रईस अहमद सहित अनेक लोग मौजूद थे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य) द्वारा रमा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1–ए, बेली रोड, नया कटरा, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर, 1269/1073 मां श्री आश्रम, मालवीय नगर, बाबा जी का बाग, प्रयागराज से प्रकाशित।

–: संस्थापक :–

स्व0 श्रीकांत शुक्ल उर्फ स्वामी कांतेश्वरानंद भारती काली बाबा

संपादक

स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य)

मोबाइल नंबर 9450475366

Email

prayagdarpan@gmail.com

R.N.I. NO.UPHIN/2014/59804

इस अंक में प्रकाशित समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदाई तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन होंगे।